श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्य का जीवन-चरित

पोत्तूरु नारायणप्प चौदरी

श्री ताळ्ळपाक अन्नमाचार्य का जीवन चरित

तेलुगु मूल : श्रीमती केसर्ल वाणि । एम्.ए., पि.हेचडि.,
हिन्दी अनुवाद : पोत्तूरु नारायणप्प चौदरी
"भारतीय हिन्दी पारंगत"
व
हिन्दी पंडित.

This Book is published with the Financial Assistance of Tirumala Tirupati Devasthanams, Tirupati Under their scheme "Aid to Publish Religious Books".

प्रतियाँ - १000.

मूल्य - रु.२५/- (पच्चीस रुपये)

प्रकाशक - पोत्तूरु नारायणप्प चौदरी.

प्राप्ति स्थान :-
पोत्तूरु नारायणप्प चौदरी,
नं. १0-२-१८३-१,
चर्चि के पास,
रायदुर्ग.
अनंतपूर जिला, आंध्र प्रदेश - पिन् - ५१५ ८६५.

डि.टि.पि. :
श्री सत्य साई ग्राफिक्स,
18-1-4/D1/A2, के.टि.रोड, तिरुपति ।

Printed at :
Kranthi Printers,
Tirupati.

निवेदन

सर्वलोक प्रभु-भगवान श्रीवेंकटेश्वर स्वामी (बालाजी) के नंदकांश-संभूत के रूप में ई. सन् १५ वी सदी में श्री - ताल्लपाक अन्नमाचार्य ने जन्म लिया था । ये महान भक्त था । वैष्णव तत्व और प्रशस्ति; ३२,००० (बत्तीस हजार) पद गीत (संकीर्तन) लिखकर ''हरिकीर्तनाचार्य''- यश प्राप्त महान पुरुष था । आंध्र वाङमय (वांग्मय) (तेलुगु-साहित्य) के इतिहास में पल्लवि चरण (कविता की पंक्ति वटेक) मय पद- रचना (शब्द संचय) के मार्ग दर्शक हो ''पद-कविता-पितामह'' के नाम से विख्यात हुआ । श्री अन्नमय्या के गीतों को अपने ही संतान वालों ने ताम्र-पत्रों पर लिखकर तिरुमल -आलय (तिरुमल-मंदिर) ताल्लपाक-भांडागार में सुरक्षित रखा । काल गर्भ में कुछ विलीन हुए परन्तु जो कुछ हमें प्राप्त हुए, ताम्र - पत्रों में, पत्र कुल , (दोहजार सात सौ एक) हैं। ताम्र - पत्रों में लिखा इतना विशाल साहित्य पाप्त होना सारे विश्व के साहित्य इतिहास में अपूर्व तथा अनुपम है। ''न भूतो न भविष्यति'' सूक्ति सार्थक हुई। गत चार सदियों के पूर्व तिरुमल-आलय असूर्यम् पश्य (अप्रकाशित हो) ताल्लपाक भांडागार में रहे इन ताम्र - पत्रों को १९२२ ई. सन् . में तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने शोध किया ।

ई. सन् १९३५ से तिरुमल तिरुपति देवस्थान ने आज तक कई दशाओं में ताल्लपाक अन्नमाचार्य, पेद तिरुमलाचार्य और चिनतिरुमलाचार्य के संकीर्तनों को ताम्र-पत्रों से ले परिष्कार कर ३२ संपुटों में (भागों में) प्रकाशित किया ।

ताल्लपाक अन्नमाचार्य के कीर्तन १९७८ ई. सन् से ति.ति.दे. (तिरुमल तिरुपति देवस्थान) श्री अन्नमायार्च प्राजेक्ट (योजना) द्वारा भक्त लोक में विशेष -ख्याति प्राप्त हुई । उस के अनुकूल श्री अन्नमाचार्य -प्राजेक्ट का प्रचार शोध प्रकाशन के विभागों -द्वारा अपने कार्य-क्रम निर्वाह कर रहा है।

आजकल पाठक-गण में और भक्त-गण में श्री अन्नमाचार्य के

संकीर्तनों के विशेष प्रशस्ति तथा प्रसार ति. ति.दे. ने पहचान कर श्रीताल्लपाक कवियों, संकीर्तनों, संपुटों के (भागों) को तथा साहित्य का पुनः मुद्रण करने की अभिलाषा (संकल्प) की है। इस के विभागानुसार श्रीताल्लपाक चिन तिरुवेंगलनाथ के रचे "द्विपद कृति" "अन्नमाचार्य का जीवन चरित" ई. सन् १९९० में ग्रंथ के रूप में प्रकाशित हुआ। अन्नमाचार्य-प्राजेकट के शोध करनेवाली डा. केसर्ल वाणि ने एम. ए., पि. हेच. डी., ग्रंथ लिखा। यह रचना बहुजनामोद प्राप्त करेगी, यों प्रबल विश्वास है।

तिरु वेंकटाचलाधिप आप हो रहे।
परिरक्षापालन करते विश्वंभर हो रहे॥

तिरुपति -१
दिनांक २०-४-'९७.

डा. मेडसानि मोहन
एम.ए., पि.हेच.डी.,
निर्देशक,
अन्नमाचार्य प्राजेक्ट,
तिरुमल तिरुपति देवस्थान,
तिरुपति।

अनुमति लेकर "तेलुगु से हिन्दी में अनुवाद मैं ने किया।"

तिरुपति.

पि. नारायणप्प चौदरी.
९/११/'९९.

दो बातें

यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे पूर्वजों ने भावी पीढियों के लिए अपने अनुभवों को साहित्य का रूप देकर सुंदर व प्रशस्त मार्ग का दिग्दर्शन किया। भौतिक रूप में आज वे हमारे बीच में न रहने पर भी अपनी रचनाओं द्वारा चिरस्मरणीय बन गये हैं।

ऐसे ही स्मरणीय महान भक्त कवि हैं सोलह सदी के श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्य। जिन्होंने अपने आराध्यदेव भगवान श्री वेंकटेश्व स्वामी (तिरुमल में विराजमान श्री बालाजी) पर तेलुगु में लगभग ३२,००० संकीर्तनों की रचना की तथा तेलुगु साहित्य की श्रीवृद्धि की। इस के कारण आप ''पद कविता पितामह'' बन गये हैं।

श्री अन्नमाचार्य के संकीर्तनों में भाव वैविध्य ही नहीं, भाषा का सुंदर औचित्य भी मिलता है। कहते हैं कि आप ने संकीर्तन सुमनों से भगवान बालाजी की अर्चना की। आपने अपने संकीर्तनों में जीवन तत्त्व, पूजा पद्धति तिरुमल में संपन्न होनेवाली तत्कालीन सेवाओं आदि का सजीव चित्रण किया है।

इस भक्त कवि ''ताल्लपाक अन्नमाचार्य'' जीवन चरित पर प्रकाश डालते हुए, डाक्टर केसर्ल वाणि ने तेलुगु में पुस्तक लिखी है। इस को हिन्दी भाषाभाषियों को परिचय कराने के उद्देश्य से श्री पि. नारायणप्प चौदरी ने हिन्दी में रूपान्तरित किया है। ति.ति. देवस्थान ने पुस्तक प्रकाश के लिए आर्थिक सहायता देकर इस प्रचार कार्य में प्रोत्साहन दिया है। भगवान बालाजी के अनुग्रह से लेखक को अपने प्रयत्नों में सफलता प्राप्त हो।

तिरुपति,

दि. १७.१२.९९.

धारा सुब्रह्मण्यम्।

उप संपादक, सप्तगिरि (हिन्दी),
ति.ति.दे. प्रेस कांपौंड,
कपिल तीर्थ रोड, तिरुपति।

परिचय

ईस्वी १५ वी सदी में देश में हर प्रांत में तत्तद् प्रांतीय भाषाओं में भक्ति साहित्य के निर्माण में उत्सुक कितने ही भक्त कवि हुए। इन रचनाओं की उत्तमता और अधिकता से साहित्य में इतिहास में इसे भक्तियुग कहा गया है। उसी समय तेलुगु भाषा में ताल्लपाक अन्नमाचार्य और उनके पुत्र-पौत्रों ने तिरुपति में श्रीवेंकटेश्वर के वर्णन में श्रीविष्णव भक्ति साहित्य का विशाल निर्माण किया।

इन कवियों में सबसे प्रथम व मूल पुरुष श्री अन्नमाचार्य का जीवन चरित ही प्रस्तुत ग्रंथ श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्य का जीवन चरित में वर्णित है। पहले अन्नमाचार्य के पौत्र चिनतिरुमलाचार्य ने अपने दादा का जीवन चरित तेलुगु में द्विपद काव्य के रूप में लिखा। उसका डा. श्रीमती केसर्लवाणी ने तेलुगु वचन में लिखा तो उसीको प्रस्तुत ग्रंथ में श्री पी. नारायण चौदरी ने हिन्दी में गद्यानुवाद कर दिया। यद्यपि यह अनुवाद है, फिर भी लेखक ने मूल तेलुगु काव्य के कई द्विपद चरणों को हिन्दी में चंदोबद्ध करके लिखा तो यहां यह मूल कृति का सौंदर्य पा गया।

मूल कृति में अन्नमाचार्य के पूर्व वंशी लोगों तथा उनके निवास स्थान ताल्लपाका का वर्णन किया गया है। अन्नमाचार्य के जीवन को उनके बचपन से लेकर अंत तक पूरु पूरा लिखा गया है। यों तो यह प्रामाणिक रचना है। भक्त कवि अन्नमाचार्य के पद उनके जीवन काल में ही, राजाओं से लेकर सामान्य जनों तक का बडा आदर पा चुके।

यद्यपि अन्नमाचार्य ने ३२ हजार तक विनय य लीला पद लिखे, तो भी अब उनमें करीब २0 हजार तक ही मिलते हैं। फिर भी याद रखना है कि एक ही कवि के हाथ लिखे इतने व्यक्ति पद और कहीं उप लब्द नहीं होते।

अन्नमाचार्य कुटुंब में सब वैष्णव हो गये। इनके पुत्र-पौत्रों ने भक्ति पद भी लिखे। भगवान श्री वेङ्कटेश्वर के वर्णन के साथ इन लोगों ने उनके आपन्नों का जीर्णोद्धार भी कराया। फिर अन्य कई वैष्णव कुटुंबों के यहां रे आचार्य भी रहे।

विगत पांच सौ सालों से ये लोग विशिष्टाद्वैत वैष्णव धर्म के अनुयायी रहते आये हैं। तेलुगु में वैष्णव भक्ति साहित्य उन लोगों के कारण से गाडियों भर गया है। अध्यात्म या शृंगार पदों के साथ इनके अन्य काव्य भी कई मि लते हैं।

ऐसे महान भक्त कवि, पदकर्ता गयाक, व संकीर्तनलक्षण कर्ता अन्नमाचार्य का जीवन चरित, हिन्दी में लिखकर प्रस्तुत लेखक ने तेलुगु साहित्य का अपार व असाधारण प्रचार कयिा। आशा है कि सभी साहित्यज्ञ इस ग्रंथ का सादर स्वागत करेंगे।

प्रस्तुत हिन्दी ग्रंथ लेखक श्री पी. नारायण चौदरी विराम प्राप्त हिन्दी अध्यापक हैं। अपने इस विराम समय को वे साहित्य निर्माण में लगाकर उसे सचमुच चरितार्थ बना रहे हैं। श्रीवेंकटेश्वर उनके प्रयत्न को सफल बनावें।

डा.एम्. संगमेशम्।

आमुख

"श्रीताल्लपाक अन्नमाचार्य का जीवन चरित"- तेलुगु से हिन्दी में अनूदित, एक महान भक्त के जीवनी का गद्य-काव्य है। आज से पांच सौ वर्षों के पूर्व दक्षिण भारत के आंध्र-प्रदेश में इन का जन्म हुअ था। उत्तर भारत के जैसे प्रसिद्ध कृष्ण-भक्ति -शाखा के प्रतिनिधि कवि सूरदास की तुलना में ठीक-ठीक (सही ढंग से) तोले जाते हैं। गोस्वामी तुलसी दास के प्रबंध साहित्य (काव्य) जैसे निर्माता न होने पर भी, संकीर्तन के क्षेत्र में सब से अनुपम हैं। और पदकविता - पितामह हैं।

भक्ति व श्रृंगार -पद साहित्य के निर्माण में श्रीअन्नमाचार्य बेजोड हैं। भक्त मीरा (राजस्थान), (कर्नाटक) कन्नड के कीर्तन कर्ता-पुरंदरदास, भक्त रामदास (आंध्र के गोपन्ना), भक्त पोतन्ना (तैलुगु के प्रसिद्ध भगवत कृतिकर्ता-अनुवादक) भक्त जयदेव, श्रीकृष्ण चैतन्य आदि की तुलना में श्रेष्ठ हो निखर उठे हैं।

इस अनुवाद--रचना -द्धारा सर्वलोक नायक, प्रभु, भगवान श्रीवेंकटेश्वर (बालाजी) के अनुपम-भक्त श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्य का परिचय (आँध्रेतर प्रातों के व खासकर हिन्दी भाषा भाषियों के) करना प्रयत्न मात्र ही है।

इस पुस्तक के छापने केलिए तिरुमल तिरुपति देवस्थान (विश्व में प्रसिद्ध धार्मिक संस्था) तिरुपति के संबंधित श्री ऐ.वि. सुब्बाराव कार्यनिर्वहणाधिकारी, ति ति. दे.

श्री आर. रामकृष्णय्या, ऐ.ए.यस., संयुक्त कार्यनिर्वहणाधिकारी (ति.ति.दे.) श्री ए. सुभाषगौड, जन (नागरिक) समाचार प्रचाराधिकारी (ति.ति.दे.) डा. एन.एस.राममूर्ति, एम. ए., संपादक - प्रकाशक, सप्तगिरि (ति.ति.दे) ने आर्थिक सहायता (अनुदान) दे प्रोत्साहन दी है। इन को मैं तहेदिल से शुक्रियाँ अदा करता हूँ।

डा. श्रीमति केसर्ल वाणि को तन-मन-धन से धन्यवाद समर्पण करता हूँ।

डा. संगमेशम् (तिरुपति) जी ने इस पुस्तक के बारे में अपने विचार

लिख दिए। मैं उन को अनुपम श्रद्धा गौरव से धन्यवाद अर्पण करता हूँ।

सरस्वती सुपुत्र एवं अवधान-सम्राट (अवधान चक्रवर्ति) आदि कई बिरुदों से अलंकृत आदरणीय, गौरव, डा. मान्यवर मेडसानि मोहन जी के तेलुगु में प्रकटित विचारों का अनुवाद हिन्दी में किया गया। (मनसा, वाचा, कर्मणा) मैं इन को त्रिकरण रूप व श्रद्धा से धन्यवाद समर्पण करता हूँ।

श्री धारा सुब्रह्मण्यम्, एम.ए., (उपसंपादक सप्तगिरि हिन्दी, ति.ति.दे. तिरुपति) ने अपने विचार लिख दिए। मैं इन को प्रेम श्रद्धा से अक्षर सुमांजलि द्वारा धन्यवाद समर्पण करता हूँ।

इस गद्य काव्य को सुंदर व आकर्षक रूप से दोषरहित सीमित अवधि में छपवाकर दिया।

मैं आशा और विश्वास करता हूँ कि हिन्दी पाठक गण इसे सहर्ष स्वीकार करेंगे।

श्री भगवान बालाजी (तिरुमल) के चरणों पर मैं अपने को सदा विनम्रता से समर्पण कर लेता हूँ।

द्वार नं -४,	आपका
जूनियर अफीसर्सक्वार्टर्स,	**पोत्तूरु नारायणप्प चौदरी।**
ति. ति. दे., कपिलतीर्थ रोड,	दि : ८-११-'९९.
तिरुपति.	

श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्य का जीवन-चरित

विश्व कल्याण की भावना, आध्यात्मिकचिंता का केंद्र है- भारत भूमि। पर तत्व बोध ही जीवन का लक्ष्य मानकर कई महान संतों ने इस कर्म भूमिपर जन्म लिया। परमात्मा के तत्व का प्रबोध करनेवाले महात्माओं के उपदेश सदा इस वेद भूमि में रहते हैं। कर्म, भक्ति, ज्ञान-- तीन मार्ग आध्यत्मिक क्षेत्र में सुप्रसिद्ध हैं। उनमें भक्ति की व्याप्ति अत्यधिक है। हमारे जीवन के प्रवाह में भक्ति मार्ग का नारद, खांडिक्य और वेदव्यास आदि महर्षियों ने प्रचार किया। उत्तरभारत में तुलसीदास, जयदेव, कबीर, मीरा, सूरदास, लीलाशुकु ने भक्ति तत्व के काव्य, गीतों के रूप में किया। ये धन्य हैं।

दक्षिण भारत में भक्ति मार्ग के प्रपत्ति (शरणागत होना) का प्रबोध करनेवालों में भगवद रामानुजुलु (रामानुजाचार्य)हैं। तमिल में वैष्णव नालायिर प्रबंध के रूप में व्यवहार करते हैं। पन्निद्दरु आलवार ने विशिष्टाद्वैत सिद्धांत को पाशुरालु के रूप में विख्यात कराया (बनाया)। कन्नड में भागवत धर्म का ई.वी. सन् बारहवी सदी में "पदगलु" नाम से विशेष ढंग से प्रचार किया।

तेलुगु में शिव कवियों के युग में याने ई.वी. सन् १२ वी सदी में शैव साहित्य, पदों के रूप में बने सा, मालुम होता है। ई. सन् १२ वी सदी में श्रीकुष्णमाचार्य के सिंह गिरिनरहरिपद प्रसिद्ध हुए। बाद में यागंटि जी के पद तत्वार्थ बोध के रूप में रचनाएँ बन मान्य हुईं।

ई.वी. सन् पंद्रहवी सदी में पदकविता नये पथ पर नवीन बन चली।

"नाम संकीर्तनम् यस्य-
सर्वपाप प्रणानाशनम्"। **(भागवत)**

सब पाप मिटानेवाले भगवन्नाम के परमार्थ को विशाल पद

साहित्य में लिख कर धन्य जीवी हुए - श्रीताल्लपाक अन्नमाचार्य।

> "सुंदर रामानुजाचार्य मत (तत्व)को
> स्वीकृत कर स्थिर रहे अन्नमय्या
> भोज के रूप में श्रीवेंकटनाथ को दिया
> सब में ताल्लपाक अन्नमय्या"।।

ई. सन् १५ वी. सदी में श्रीवेंकटेश्वर के नाम अर्पित ३२,००० (बत्तीस हजार पद (गीत) रचना कर वैष्णव -धर्म का पुनरुत्थान करनेवाले -ये अन्नमय्या धन्य जीवी हुए। इनके कीर्तन आज भी सब के जिह्वा पर गाये जाते हैं व सुने जाते हैं।

भगवान के नाम लीलाएँ, गुणगान संकीर्तन (पद) साहित्य में निबद्धकर आचंद्रतारार्क (विनष्ट न होनेवाली) कीर्ति पायी; अन्नमय्या ने। इन का जीवन चरित कई लोगों का मार्ग दर्शन करता है।

अन्नमाचार्य के जीवन चरित की रचना इन के पोता (पुत्र का पुत्र) चिनतिरुवेङ्कलनाथ ने रचना की थी। इस रचना के आधार यह व्दिपद काव्य है। यह पेदतिरुमलाचार्य के चौथा पुत्र था; चिन्नन्ना व्यवहार नाम भी था। दादाजी के जीवन चरित प्रामाणिक रूप से रचना की थी इस ने। तेलुगु साहित्य में द्विपद प्रक्रिया को- काव्य का रूप दिया। दादाजी के जीवन चरित के अलावा परम योग विलास, अष्टमहिषी कल्याण, उषा परिणयम् नामक द्विपद काव्यों की रचना इस ने की। यह द्विपद काव्य रचना में योग्य तेनालिराम कृष्ण से --

> "चिन्नन्न द्विपद के विधिविधान
> (रचनाक्रम) रचना पेद तिरुमलय्या पद-सा मालुम हैं होते।"

प्रशंसा की गयी।

तेलुगु के साहित्य इति हास में कवियों के जीवनियों का गद्य रूप देने का आचार क्रम नहीं है। तेलुगु के साहित्य इतिहास में प्रसिद्ध तिक्कना के बारे में दग्गुपल्लि दग्गन्न व राधा माधव कवि ने पंडिताराध्य के बारे में सोमनाथ ने लिखे इन के ग्रंथों से प्रकट होता है। कुछ कवियों ने काव्य में ''कृति कर्तृ वंश'' नामक शीर्षक से अपने वंश के बारे में संक्षिप्त लिखा है।

ताल्लपाक वंश के ख्याति के मूल पुरुष था-- ताल्लपाक अन्नमय्या। पद कविता पितामह था। ''पंचमागम सार्वभौम'' बिरुद प्राप्त कर चुका था। अन्नमाचार्य चरित को उनके पोताचिन्नन्ना ने रचना की थी। इस कारण साहित्य और इतिहास के मूल्यों से पूर्ण प्रामाणिक ग्रंथ है-- यों कह सकते हैं। अपने वंश के लोग ही अपना चरित लिखने के यशस्वी था अन्नमय्या। इस अन्नमय्या के कवि के जीवन की कथा आधार बना कर (स्वीकृत) जीवन चरित की रचना लिखी गयी; तेलुगु भाषा साहित्य के प्रथम कवि ताल्लपाक वंश वाले ही थे, यह विशेष महिमा है।

ताल्लपाक वंश के मूलाधार पुरुष ताल्लपाक अन्नमय्या था। हरि कीर्तन के आचार्य था। पदकविता पितामह था। पचंमांगम सार्वभौम बिरुद से भूषित था।

अन्नमाचार्य का चरित द्विपद लिखित नमूने की प्रतिलिपि कडपा जिले के रायचोटि तालूका ''मडिताडु'' गाँव के निवासी ताल्लपाक सूर्यनारायणय्याजी ने पुराने ताड के पत्तों पर लिखे प्रतिलिपि के अनुसार ई.वी. सन् १९४० वाँ वर्ष में लिखा होगा। तिरुपति के श्रीवेङ्कटेश्वर प्राच्य ग्रंथालय को दिया। स्वर्गीय वेटूरि प्रभाकर शास्त्री जी ने; ताल्लपाक सूर्यनारायणय्याने जो दिया काव्य द्विपद लिखित प्रति का संशोधन कर ई.वी. सन् १९४९ में देवस्थान के द्वारा विपुल आमुख (भूमिका) के साथ छपवाया था। तदनंतर ई.वी. सन् १९६८ में

आमुख मात्र ही द्वितीय मुद्रण के रूप में प्रकाशित हुआ पुनः १९७८ में ई.वी. सन् ताल्लपाक साहित्य परिष्कर्ता श्रीगौरिपेद्दिरामसुब्बशर्मा जी के संशोधन (परिष्कार) से तीसरा मुद्रण देवस्थानम ने प्रकाशित किया।

द्विपद काव्य में अन्नमाचार्य के पूर्वजों से लेकर अन्नमय्या का जन्म जीवनी अन्नमय्या के पुत्र-पोते आदि के विवरण और उनकी रचनाओं के विवरण दिये गये।

इस रचना में ''अन्नमाचार्य चरित'' द्विपद और कीर्तनों के आधार पर, कम रूप से विवरण दिया गया है।

ताल्लपाक - पोत्तपि नांडु मंडल के बीच में ताल्लपाक ग्राम शोभित है। उस ग्राम में विख्यात व शोभित चेन्नकेशव स्वामी (भगवान) करुणाकटाक्षों से (कृपादृष्टि से) उस ग्राम के निवासी सब लोग सुख जीवन बिता रहे थे। कहते हैं कि यहाँ के भगवान चेन्नकेशव स्वामी ज़ी की मूर्ति जनमेजय ने प्रतिष्ठित की थी। हरे-भरे शोभित यह ग्राम मुनियों और सब देवताओं का वासस्थान है यों कहते हैं-- स्थल महिमा जाननेवाले। उस ग्राम के निवासी--

''दर्शन करते गोविंद के मंगल मूर्ति
सुनते रहते नारायण वृत्तांत, चयन''

करते रहते कौस्तुभांसित पूजा - स्मरण करते माधव के चरण युगल की अर्चना, वनमाली के प्रसाद को खाते रहते; चलते नंद नंद के नगरी के यहाँ पर, दुर्विचार स्पप्न में भी न करते याद; इंदिरा रमण के मानसी बन बिताते जीवन ।

इतने महोन्नत भगवान से प्रसादित आत्मा के संस्कार से प्रकाशित ताल्लपाक ग्राम में अन्नमय्या ने जन्म लिया। अन्नमय्या

नंदवर वैदिक ब्राह्मण वंशज थे। ऋग्वेद और अश्वलायन सूत्रवाले थे। भारद्वाज गोत्रवाले थे। इनके पिता नारायण सूरि और माता लक्कमांबा का पुत्र था। इन दंपतियों को श्रीवेङ्कटेश्वर के वर प्रसाद के रूप में अन्नमय्या का जन्म हुआ।

नंद वरीकों की गाथा (वृत्तांत) :-

नंदवरीकवाले ई.वी.सन् दसवीं सदी में काशी से आंध्रप्रदेश उपनिवेश बना आये थे। ये शुद्ध वैदिक ब्राह्मण परंपरा के वाले हैं; यों प्रख्यात हैं। ईस्वी सन् दसवीं सदी में आजकल के कर्नूल जिले के नंदवरम नामक ग्राम पर नंद नामक राजा शासन करता था। यह राजा जब काशी यात्रा पर गया, तो वहाँ के कुछ वैढिक ब्राह्मण चामुंडेश्वरीदेवी के उपासक परिचित हुए। उस समय वारणासी में अकाल के आने से उनके ब्राह्मण कुटुंबवाले कुछ लोग आंध्रप्रदेश में उपनिवेश के रूप में आकर नंद राज के आश्रम में सुस्थिर हो रहे। नंद राजा से बुलाये वैदिक होने के कारण नंद वैदिक, नंद वरम में रहने के कारण से भी नंदवरीक के नाम ग्राम (हत) में रहने के कारण से भी नंदवरीक के नाम से व्यवहत हो प्रचारमें हैयों है आये प्रख्यात लोगों का कथन है। समय के बीतते ये आजकल कर्नूल और कडपा जिलों में स्थिर रहे। इस प्रकार इतिहास शोध (अन्वेषण) के विद्धानों का मत है।

ताल्लपाक ग्राम का नाम अन्नमय्या के वंशजों को घर के नाम से जाति के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

अन्नमाय्या के वंशज :-

भारद्वाज गोत्र के अन्नमय्या के पूर्वजों के चार पुस्तों (पीढियों संबंधितविवरण चिन्नन्ना, अन्नमाचार्य के द्विपदों से और अष्टमहिषिकल्याण से स्वीकृत किये गये।

''भरद्वाज -ऋषि''

नारायणय्या

विठलय्या

नारायणय्या

विठल

नारायण

नारायणसूरि

अन्नमाचार्य

अन्नमाय्या पित्रु पितामह-नारायण था। पिठलय्या विष्णुपद भक्तिरत हो ताल्लपाक के चेन्नकेशवस्वामी की अर्चना पूजा सेवा करते जीवन बिताते थे।

अन्नमय्या के चौथी पीढी में जन्मे नारायणय्या की कथा से अन्नमाचार्य का जीवन चरित प्रारंभ होता है।

नारायणय्या को बचपन में पढाई लिखाई न पाप्त हुई । पिता विठलय्या ने समझा कि यह बालक मेरे पास उपयोगी नहीं । पार्श्व के ऊरुकूरु में अपने बंधुओं के यहाँ छोड दिया। यह उरुकूरु आजकल कडपा जिले के राजमपेट तालूक में है। अन्नमय्या का पोता (पूत्रका पुत्र) चिन तिरुमलय्या ने ऊटुकूरु चेन्नरायुनि के बारे में किर्तन लिखे। ऊटुकूरु में गुरुओं ने नारायणय्या के सामदान भेद दंडा वित्युपाय चतुष्टयम के अनुसार चतुर्विध उपायों से शिकार कराया। अतं में गुरु ने कहा --

''सौ सो बातें बोल मारपीट
कपोल पर चंपत लगाकर

बहुतश्रम से पढाने पर भी
एक पद भी कँठस्थ करें
तो कैसे ? अरे! बुद्धिहीन
इस के लक्षण देखने से
आश्चर्य होता मुझे
यों एक दिन -।।''

नारायणय्या को छत के नीचे रस्सी से लटका दिया। बिंगिया - उठाया बार बार दोनों पैर रस्सी से बांध मवेशी केजै से गिरातेछ: भूमि पर गिराया गया। नारायणय्या को गुरुओं ने कठिन दंडदेने परभी, जांच करने पर-

''इस प्रकार करने पर भी खिलाफ (विरुद्ध) न बोलेसकता, आँसू बहाता बालक अपमान से शुष्क (कमजोर) हो गया। को मलमन धायल हुवा- नारायणय्या ने सुना किऊटुकूरु के ग्राम शकित देवी पोतलम्मा मंदिर के यहाँ वल्मीक में साप है।''

''सांप इसे इस इसबाधा से।
वह सर्प काटे तों सबदुख-दर्द
मिटजायेंगे यों सोचता''।।

उसने यों सोच वल्मीक में हाथ रखा। आजकल ऊटुकूरु में यह मंदिर दीख पडता है। पर ऊटुकूरु के शिवालय के एक कमरे में स्त्रीमूर्ति का एक रूप शिला ''चिंतलम्मा''का है यों स्थानीय लोगों का विचार है।

बालक नारायणय्या को त्रिकालवेदिनी चिंतलम्मा ने दर्शन दिए और सांत्वना करायी। सब विध्याओं से शोभित ताल्लपाक में रहे चेन्नकेशव की कृपा से प्राप्त करेंगे।

''वही नहीं तीसरी पीढी में
मुझे न छोडने वाली ख्याति
तुम्हारे वंश में परमभागवत
भक्त का होगा जन्म शौरि के वर से ''॥

यों नारायणय्या पर कृपा दिखाकर अदृश्य हुई। माता जी के आदेशानुसार नारायणय्या ताल्लपाक पहुँचा आश्रित क्लेश नाश करने वाले चेन्नकेशव स्वामी (भगवान), की सेवा की उसने सब विद्याओं का पंडित बना। सर्वज्ञ नामक कीर्तिपायी उस ने।

नारायणय्या का पुत्र है- नारायण सूरि। यह सर्व विद्याओं के विद्धान हो प्रसिद्ध हुआ। इस की धर्म-पत्नी लक्कमांबा थी। नारी (स्त्री) माडु पूरु के माधवस्वामी के भक्त थी।

ग्राम माडुपूरु में माधवमूर्ति (भगवान) साथी संरक्षक हो उससे करता संभाषण ॥

माडुपूरु कडपा जिले के सिद्दवटम् तालूका में है। अन्नमय्या के पिता का नाम नारायणसूरि था- चिन्नन्नाने बताया। इस से प्रकट होता है कि ताल्लपाकवाले अन्नमय्या के जन्मके पूर्व में ही पंडित लंश के नाम से प्रशंसापाते थे- यों भावना करते हैं।

तिरुमल कीयात्रा -अन्नमय्या का जन्मः-

भगनाम के सेवा तत्पर नारायणसूरि और लक्कमांबा संतान के नहोने से बहुत दुखी हुएः-

सदा लक्कमांबा से नारायणसूरि वर अनुपंम धन-दौलत में प्रेम से बडे सुखी हैं। अतं में संतान के चिन्ह होने पर वंशके उद्धारक एक भी होतो उद्धार होता।

पुत्र के जन्म से अपना जन्म हो सार्थक होता ऐसे पुत्र के नहोने

से वे बहुत दुखी हुए। सर्व जनके ख्वाहिशों की अभिलाषाओं की पूर्ति करनेवाले वेंकटेश्वर की अर्चनाकरने की चाह से पर्वत (तिरुमल) पर जाने रवाना हुए। तिरुमल पहूँच भगवान के मंदिर में प्रवेशकर गरुड स्तंभ के यहाँ उन्हों ने साष्टांग वंदना की। भगवान ने अपनी तलवार नंदक को स्वन्प में प्रसाद दिया। (दिया) नंदकांश सेअपने को संतान पुत्र का जन्म होगाः- यों नारायणय्यासूरि और लक्कमांबा समझ गये। फूले न समाते वे पुण्यदंपति ताल्लपाक पहुँचे। भगवान की कृपा सेः-

''राजीवलोचन के वर प्रसाद से तेज बुद्धि के अमित हो व्याप्त लक्कमांबा की पुण्य लावण्य निधि के अच्छे ग्रह-प्रभाव से उन्नत हो शोभित''

अनुपम लग्न में वैशाख में विशाख जग में प्रकाश मान हो जन्मा अन्नमाचार्य।

अन्नमाचार्य का लक्कमांबा के गर्भ से पुत्रोदय हुआ। नारायणय्यासूरि ने उस बालक के आगमशस्त्रानुसार जात कर्म किया।

''अन्नम ब्रह्मेति व्यंजनात के श्रुति वाक्य के प्रकार पर ब्रह्मवाचक के रूप में अपने पुत्र का नाम करणकराया- ''अन्नमाय्या''अन्नमाय्या जी, अन्नमाचार्य, अन्नयगरु अन्नचार्य, कोनेटि अन्नमय्या नामक नामोंकी भिन्नता- ताल्लपाक साहित्य और शासनों में दीखते हैं।''

अन्नमय्या के जन्मकालके बारे में चर्चाः-

अन्नमय्या के जन्म काल के बारे में साहित्य शोधकों में मुख्यतः दो भिन्न विचार हैं ।

१.अन्नमय्या का जन्म-वर्ष ईसवी सन् १४०८ है।

२. ईसवी सन् १४२४ है।

उपर्युकत विचारों को जांचेंगे- अन्नमाय्या के जन्म काल के बारे में चर्चा करने के मुख्य आधार ये हैं :-

१) अन्नमय्या के जन्म काल का विवरण करते ताल्लपाक चिन्नन्ना-

> **"वैशाख में विशाख जग में**
> **हो प्रसिद्ध, जन्मा अन्नमाचार्य"॥** (अन्नचरितपुष्ट १.)

इस तरहमास नक्षत्रों का उद्धरण दिया। इस वर्ष का विवरण नहीं है।

२) ताम्र-पत्रों के शासनों में विवरण- अन्नमाचार्य संकीर्तनों के लिखे ताम्रपत्रों के शासनों में निम्न लिखित वाक्य लिखे गये। स्वस्तिश्री जयाभ्युदय शालिवाहनशक वर्ष १३४१ के आज क्रोधि वर्ष ताल्लपाक अन्नमाचार्य का अवतार सोलह वर्ष के बाद तिरुवेंगल नाथ के दर्शन हुए। उससे प्रारंभ शालिवाहन एक वर्ष १४२४ आाज के दुंदुभि वर्ष फागुण कृष्ण-पक्ष (कृष्णपक्ष) द्धादशि के दिन तिरुवेंगल नाथ को समर्पित ताल्लपाक अन्नमाचार्य के विनय से (नम्रता से) आध्यात्म श्रंगार के किर्तन ।

उपर्युकत ताम्र-पत्रों के शालिवाहन एक १४२४ (चौदह सौचौबीस) ईस वी सन् १५०३ (पद्रंह सौ तीन) है। याने दुंदुभि के फागुन कृष्णपक्ष के द्वादशी के वर्ष मास, तिथि (दिन) विवरण स्पष्ट मालुम होता है। और १३४६ (तेरह सौछियालीस) क्रोधिकातो अन्नमय्या का जन्म या वेंकेटेश्वर के दर्शन ? इस के बारे में विविध विचारों की प्रेरणा करता है।

ताम्र पत्रों के (ऊपर) लिखावट का (शासन) का प्रधान उद्देश्य अन्नमय्या के किर्तनों का विवरण ही है, न कि जन्म के बारे में और मुप्यु के बारे में। इस संदर्भ में पेद्द तिरुमलय्या के कीर्तनों की पहली रचना ताम्रपत्रों पर लिखे वाक्य उद्धरण के योग्य हैं।

शालिवाहन शक वर्ष, फागुन कृष्ण पक्षके द्वादशी के १४२४ (चौदह सौचौबीस) आज के दुंदुभि वर्ष के प्रारंभ ताल्लपाक अन्नमाचार्य अपने पुत्र तिरुमालाचार्य ने प्रति दिन एक कीर्तन श्रीवेंकटेश्वर को समर्पण करने कहा तो विनय के कीर्तन (प्रार्थनाके) कहा तो अन्नमाचार्य के परमपद प्राप्त दिन से पेद्दतिरुमलाचार्य ने जो कहे थे कीर्तन।)

उपर्युक्त ताम्र पत्रों पर के भाषणाों से पेद्दतिरुमलाचार्य के कीर्तन रचना प्रारंभ का विषय स्पष्ट होता है। इस भावना से देखें और जाँचे तो अन्नमाचार्य शालिवाहन १३३० सर्वधारि नाम वर्ष, वैशाखमास नक्षत्र युक्त पूर्णिमा के दिन (नि १-५-१४०८ई . वी में) जन्मा, कह सकते हैं। इस गणना के अनुसार तिरुमल-तिरुपति देवस्थानमवाले न्नमाचार्य के जयंति-उत्सव १९७८ धूमधाम से मनाते हैं।

अन्नमाचार्य के साहित्य शोधक श्री साधुसुब्रह्मण्यम शास्त्री ने चागंटि शेषय्याने गौरिपेद्दि सब्बराम शर्मा ने जि. यन. रेड्डी ने, कामिशेट्टि श्रीनिवासुलु शेट्टी ने और डा. तथा ताम्रपत्रों पर के लिखा उस की प्रति के अनुसार अन्नमय्या का जन्म-काल ई.सवी सन् १४०८से वर्ष निर्णय किया।

ताल्लपाक के कवियों की रचनाएँ और साह्त्यि-सेवा लोक को प्रकाशित कराया। स्वर्गीय वेटूरि प्रभाकर शात्रीने ईस. वी. सन १९४५ वर्ष में वेंकटेश्वर पदों के आमुख लिखते अन्नमय्या का जन्म १४०८ का वर्ष निर्णय किया। परंतु ईस वी सन् १९४९ वर्ष में अन्नमाचार्य चरित द्विपद के आमुख लिखते अन्नमाय्या ई. वी. सन् १४२४ से १५०३ तक जीवित थे उद्दरण किया। इनके पुत्र डा. वेटूरि आनंद मूर्ति जी ने ताल्लपाक कवियों की कृतियाँ विविध साहित्य -प्रक्रियाएँ ईसवी (सन् १९७५ वर्ष में) नामक ग्रंथ में अन्नमय्या के जी वनकाल ई. वी सन् १४२४ से १५०३ के रूप में निर्णय किया।

अन्नमय्या के और पेद्द तिरुमलय्या के लिखे ताम्रपत्रों पर की लिपि के अनुसार शोधकों के विचार इस प्रकार हैं-

अन्नमय्या का जन्मकाल शालिवाहन एक १३३० इसवी सन् १४०८ है। पद कीर्तनों के प्रारंभ कालशालित्वाहन एक १३४६ है.ई. वी. सन् १४२४ वर्ष है। अन्नमय्या के निर्याण शालिवाहन एक १४२४ ई. वी सन् १५०३ वर्षयों निर्णय किया जा सकता है।

अन्नमय्या का बचपन :-(अन्नमाचार्य)

हरि नंदकांशज होने सहृदय में परम सुज्ञान-संपत्ति उल्लसित।

भोलाशिशु अन्नमय्या वेंकन्न (भगवान बालाजीः के प्रसाद के कहने से ही माता का दूध पीता था। वेंकटपति की वंदना करने , कहने मात्र से ही वंदना करता था। वेंकटपति के नाम लोरियाँ गाने से सोता था। इस प्रकार अन्नमय्या शैशव कालसे वेंकटपति (बालाजी) के स्मरण से समय बिताता था।

अन्नमय्या के पांच वर्ष की अम्र हुई- नारायणसूरि ने बुधजन सम्मति से उपनयन कराया (यज्ञोपवीत कराया) अन्नमय्या कोः-- --अहिनायकादि ---

भगवान के वर से परमविद्याएँ सब
अमित जिह्वा के ऊपर

अपने आप ही प्रवेश कर नृत्य करने लगी। अन्नमय्या के किथत बातें सब अमृत का सा और गाये गीत अमित संगीत ज्ञान से शोभित होते थे। बचपन में ही वेंकटपति पर आश्चर्य जनक (दातों तले उँगली दबाने योग्य) कीर्तन गाता था। परंतु भगवान की अनुमति तो उन के सोलह वर्ष की उम्र में प्राप्त हुई। भगवान वेङ्कटेश्वर के आदेशानुसार अन्नमय्या ने अपने षोडश वर्ष की आयु से ही एक दिन में कम से कम, एक कीर्तन लिखना आरंभ किया। यह विषय ताम्रपत्रों

पर लिखे प्रथम वाक्यों से भी स्पष्ट होता है।

अन्नमय्या बचपन में माता-पिता और भाभी के निर्देशित काम सब (बिना ऊबकर) करता था। मिले जुले (जुडे हुए) परिवारों में काम अवश्य करना पडता है। इसलिए डाँड भुजों पर रख गीत गाते रहते, घरवालों को अच्छा न लगता था। एक दिन सब ने मिलकर कहा -- जंगल जा, पशुओं (पालतू जानवरों) को घास काट लाओ। अन्नमय्या - जंगल में गया। उसने हरी भरी घास - देखी।

''पाप समूह श्रीपति के निर्मित बेल
फावडे से काटूँ योगींद्रसा''।।

थोडी सी घास काटी। घास काटते रहने पर भी सारा मन श्रीहरि के ऊपर ही (बारे में) सोचता है। थोडी घास काटते समय आखिर की छोटी उँगली (कनिष्टा) कट गयी खून बहने लगा। बेदना में विरक्ति और भक्ति पैदा हुयी। वेदना में वेदों के उदभवसा -यह घटना अन्नमय्या के जीवन में भक्ति-रस के जोश का प्रादुर्भाव हुआ। लोक के बंधनों से (भव बंधनों से) मोह मिट गया-

अहो यौवन बीत गया, काल गया गुजर;समय (काल) के अंत में मनमें मोहमति ये बंधु जन, माता-पिता-

दुख देते, चलते -फिरते
इन का बंधन उत्तम समझ,
हरिका भजन स्मरण आत्म में न चिंतित (दुखी) हुआ मैं करता
इस प्रकार दुखी हो-
माता, पिता, गुरु देव

सब हो संपत्ति(धन-दौलत) सब मेरी रक्षा करते शेषाद्रिनाथ प्रकार की सेवा, अर्चना करने कहता मन। ''

इस प्रकार का निर्णय कर लेता है।

तिरुमला की यात्रा :-

उस समय तिरुमला जाने के यात्रियों के समूह (भीड) को अन्नमय्या ने देखा। जो हँसिया थी हाथ में, उसे उस ने फेंक दी और यात्रियों के भीड में मिल गया। वे यात्री सब सनकादि नाक भक्त थे। वे मृग -चर्म धारी थे। उन के सिर पर मुकुट थे। पीला अभ्रक जैसे और केसरी रंग के वस्त्र पहनचुके थे वे। ललाट पर चिकने वेष्णव धर्म के सूचना सी रेखाएँ, शंख, चक्र मुद्राएँ और पैरों (चरणों) में काँस के पाजेव पहने भक्ति में पर वश हो:-

'' विनय करेंगे वेंकटगिरिके भगवान वेंकटेश्वर की,
विपदामें याद करते, दुख में करते स्मरण
हम देव के, वे हैं आदि देव।
मिट्टी के बर्तन, दूर हैं करते ते वे
आज लेनेवाले हैं वे, वनजनाम हैं
जन्म के बांझ को भी संतान कराते गोविदं
जो जो चाहते वे वर देने वाले भगवान हैं वे''

यों उनके अनुपम विचित्र ढंगों से मिल कर तिरुपति जाता है अन्नमय्या।

अन्नमय्या ने तिरुपति सरहद प्रातों में ग्राम देवी (शक्ति) ताल्लपाक गँगम्माकी अर्चना पूजा की। स्थानीय सज्जनों की राय है कि यह ताल्लपाक गंगम्मा सज्जनों के प्राचीन देवी है। तिरुपति में आजकल भी तातय्या कुंटा के गंगम्मा, अंकालम्मा, बेकालम्मा कालेम्मा, नेरेल्लम्मा, काबम्मा मारेय्या नामक ग्रामदेवी-देव शोभित हैं। पूर्व में तिरुपति अनेवाले भक्त-जन मई मास (मास) में ग्राम देवी गंगम्मा के दर्शन करते थे। उस की अर्चना-पूजा के बाद तिरुमला के दर्शन करने का आचार क्रम था। आजकल भी पिरुपति में मईमास में ग्राम देवी गंगम्मा का उत्सव धूम-धाम से मनाया जाता है।

गंगम्मा के दर्शन के बाद अन्नमय्या
''देखो, देखो वह तिरुवेंकटाद्रि चार युगों में,
शोभित, अमित वैभव से।''

उस तरह स्तुति करते १०८ तिरुपतियों की प्रशंसा वहाँ के सम्राट पीठ, देशार्यों के मठ तप करने वालों के गृह और विश्रांत प्रदेश के दर्शन किये। तिरुमल यात्रा करते रास्ते के बीच में अलिपिरि सिंगरि, तलयेरु गुंडु (बडा पत्थर) पेद्दएक्कुडु (ऊँची सीढियों पर चढना) कपूरंपुकालुव (नाला) मोकाल्लमुड्डुपुलनु (घुटनेटेक) के बारे में विवरण करना (देना) उचित है।

अलिपुरिसिंगरि :- पहाड के चढने में पहली सीढी, का प्रांत है अलिपिरि। अडिपंडि, अलिपिरि के नाम व्यवहार के नाम थे। यहाँ के शोभित नरसिंह- स्वामी के दर्शन अन्नमय्या ने किये।

तलएरुगुंडु :- जो भक्त पहाड पर चढते हैं। पैदल इस पहाड के पत्थर को सिर और घुटनों से स्पर्शकर वंदना करने से सिर का दर्द और परैरों में दर्द नहो होतेयों विश्वास है। इस पत्थर पर हनुमान की मूर्ति है, हमें दीखती है। इस तलएरुगुंडु के यहाँ ही भगवान बालाजी के चरण हैं। यहाँ के शोभित चरणों के बारे में ऐतिहासिक कहानी (कथा) है।

श्री रामानुजुलुजी ने तिरुमला के नंबी के यहाँ रहस्यार्थ सुनाते जाते समय (संदर्भ में) तिरुमला के नंबी को मध्याह्न (दोपहर) की पूजा में अडचन होती थी। इस से तिरुमला के नंबी दुखी हुआ तो भगवान के ये चरण तलएरुगुंडु (पत्थर) के ऊपर देखे गये; यों-- इतिहास में है। भगवान के चरण कमलों पर अन्नमय्या ने -- ''ब्रह्मके धोया चरण इसी चरण की सेवा करते जग के लोग;'' यों स्तुति की है।

कुरुव मंडप :- तल एरुगुंडु के पार करने के बाद दीखनेवाला विशेष स्थल है-- कुम्मर मण्डप।

कुरुव नंबि, नामक एक कुम्हार भक्त के बारे में अन्नमय्या ने कीर्तनों में बताया यह कुम्हार प्रतिदिन मिट्टी से बर्तन बनाता था। यह कुम्हार प्रतिदिन मिट्टी से बर्तन बनाया। बची मिट्टी से फूल बना आय से निर्मित लकडी के मूर्त रुप वेंकटेश्वर की पूजा करता था। तिरुमला के आर्चा मूर्ति की पूजा तोंडमान सम्राट सुवर्ण के फूलों से पूजा करते थे। एक दिन सम्राट से पूजे जाने वाले सुवर्ण-फूल वहाँ से हटकर भगवान के चरणों पर मिट्टी के बने फूल शोभित थे। जब सम्राट को यह मालुम हुआ तो कुम्हार के चरण -वंदना करते हैं और शरण में आते हैं।

''कुरुव'' का अर्थ है पहाड पर पैदल जाने की पगंडडी। पगडंडी के तटपर रहने के कारण कुरुव नंबी नामक व्यवहार पडा अन्नमय्या ने कुरुव नंबी के बारे में पहाडियों पर शोभित कोनेटिराय है वह (कीर्तन एक से एक सौइक्कावन) कुरुव नंबि ''तिरुमल कुरुव नंबि नामक कीर्तनों में बताया।''

पेद्दयेक्कुडु:- यहाँ के सीढियाँ बडी और सीधी ऊंची होती हैं।

पल्लरायनि मठ:- ई वी. सन् १२८७ में न नम्मालवारु मंडप कानिर्माण पल्लवराय ने वनाय। इन से निर्माण कराये गये पल्लवराय का मठ और एक है।

कप्पुरपुकालुव:- पेद्दयेक्कुडु और मोकालु मुडुपुलु के बीच यहनाला है। अन्नमय्या कर्पूर नाले के सुगंध का घ्राण(सूँघते) करते वृक्षों के समूह से व्यापे विटप फूलों के निकुंज जल प्रवाह देखते मोकाल्लमो रुव पहूँचा उस पर्वत प्रवाह देखते मोकाल्लमारुव पहूँचा उस पर्वत परपहुँचते दुपहर का समय होने लगा।

उस में:-

''माता जी को छोड रहे तो
रहने वाला न होने पर

मुखद्वार पार कर औरों को गृहद्वार''

पौधों के लता निकुंज में बैठ

पसीना के बहते-

चप्पल पहने बडीथकावट

एक शिला पर ''॥

शयन किया (लेटा)।

मोकाल्लमुड्डपुः-

वेंकट शैल (पर्वत) सालिग्राम हुआ। इसलिए यात्री लोग घुटनों पर चलते थे यों कहते हैं एक- एक सीढी घुटने जैसे ऊँची हो घुटने बंदकर चढने केकारण मोकाल्लु मड्डपु नामपडा -यों भी कहते हैं। बाल अन्नमय्या श्रम से थके -भूखे को जगदंबा अलिवेलमंगा ने देखा। करुणमयी अलिवेलमंगाने प्रकाश से शोभितज्योति फैलाते (चमक- दमक से व्याप्त) एक बडी महान सुमंगली बन, जहाँ बालक (अन्नमय्या) था वहाँ आकर बालक की थकावट दूरकर देती है। सालिग्राम पूर्ण तिरुमला पर चप्पल पहने पैरों से (चरणों से) न चढना चाहिए। (मानकर) आप के साये प्रसाद (आहार) दे कंदर्प जनक के मार्ग दिखा गायब होती है।

अन्नमय्या :-

''उस समय चारों ओर देख वह बालक चित्त में आश्चर्य होते।

....

....''

अपने लिए क्यों दिया प्रसाद-फल प्रभाव से परम साहित्य पारंगत हो संरस क विता वाचाप्रौढि शोभित; अलि वेलमंगा (देवी) को मुझे मार्ग में सललित एक शतक बताया।

शतक चर्चा :--

यह शतक वाविल्लवालों से ई.वी. सन् १९४७ में प्रकाशित की गयी। प्रकाशित वेंकटेश्वर शतक में वेंकटेश्वर! पद्यांत में बोध (टेक) है। ताल्लपाक के घन ने "शतमालिका" अम्मा को ही समर्पण किया।

बत्तीस हजार कीर्तनों को श्रीवेंकटेश्वर के नाम समर्पण; रचे अन्नमय्या की प्रथम रचना वेंकटेश्वर शतक होना मुख्यतः देखने पढने लायक है। (चिंतन शील है)। वेंकटेश्वर शतक के नाम होने पर भी विषयकी प्रधानता से "मंगांबिकाशतक" ही है-- यों स्वर्गीय वेटूरि प्रभाकर शास्त्री का विचार था।

अलिवेलमंगा को शतक का समर्पण कर मोकाल्लु मुड्डुपु से अन्नमय्या - उस देवी के आशिषों से (आशीर्वादों से) तिरुमला पहुँचते हैं।

तिरुमला में दिव्य स्थलों के दर्शन करना पुष्करिणि -- अन्नमय्या सब से पहले तिरुमला के सब पापों को मिटानेवाली स्वामी के पुष्करिणि के दर्शन किये। स्वामी के इस पुष्करिणि के बारे में वराह पुराण --

> "स्वामी के पुष्करिणि-स्नानम् सदगुरोः पद सेवनम् ।
> एकादशीव्रतमाचा पित्रय मत्यंतं --
> दुर्लभम्
> दुर्लभंमानुषी जन्म दुर्लभं तत्र जीवनम् ।
> स्वामि पुष्करिणी स्नानं त्रय मत्यतं दुर्लभम् ।।"

इस प्रकार स्तुति की गयी। स्वामी के पुष्करिणि का स्नान सदगुरु के अच्छे आश्रम में रहने के समान है। एकादशिव्रत अनुष्टान सिद्दि नामक तीन सुघटनाएँ होना पुण्य विशेष है। चौरासी लाखों के प्राणियों में मानव जन्म को पाना दुर्लभ है। उसमें एक बार स्वामि

पुष्करिणि में-- बहुत बडा दुर्लभ है यों वराह पुराण का वर्णन है।

अन्नमय्या परम पावन अखंड विभवों का केंद्र
''कई विधानों से उन्नत हो पुष्करिणि के यहाँ आ
.... कृत स्नान हो
....
बहु शोभित दर्शने, शोभा, दीखते स्वामि पुष्करिणि में ॥''

सुंदर शोभा देखविस्मय से--
देवी-देवी लड्डों का बेडा है पुष्करिणि माता,
असंख्य सेवाएँ वंदनाएँ लोकपावनि माता तुम:
इस प्रकार स्तुति करते हैं।
अन्नमय्या के संकीर्तनों की राशि में

''तुम को है क्यों प्रिय ये लड्डों के बेडों का उत्सव तुलते अमित दौलत से शोभित उत्सव।''

इस प्रकार पुष्करिणि के बारे में कीर्तन है। तिरुमला का लड्डों के बेडोत्सव हर मंगल के दिन आर्जित सेवा (सेवा) के बारे में और फाल्गुनमास कल एकादशी से पूर्णिमा तक सरकार की सेवा के रूप में निर्वाह करना आचार हुआ।

वराह स्वामी का मंदिर :--

भगवान के पुष्करिणि दर्शन के बाद वराह स्वामी के मंदिर में अन्नमय्या गये। तिरुमला के वराह क्षेत्र का दूसरा नाम है। स्वामि पुष्करिणि के वायव्य दिशा में यह मंदिर है। कथन है कि वराह स्वामी ने ही वेङ्कटेश्वर को तिरुमला में रहने अनुमति दी है। इस की कृतज्ञता पहले वराह स्वामी के दर्शन होने का नियम है-- यों पुराण कहते हैं। आजकल भी तिरुमला में प्रथम-पूजा - नैवेद्य वराह स्वामी को ही समर्पण करते हैं।

वराह स्वामी के मंदिर के दर्शन के बाद -- अन्नमया ने बडा गोपुर, छाया और बदलनेवाली (इमली के वृक्ष) छाया मन की कामनाएँ पूर्ण कर देनेवाले -- गरुडस्तंभ (खंभा) के यहाँ साष्टांग वंदना की। चंपक प्रदक्षिणा (चारों ओर घूमना) की।

बाद प्रसाद के यहाँ जाकर तिम्मप्पा को समर्पित भक्ष्य-भोज्य, मक्खन को गरम करके बनाये गये घी से बने चित्र (रंगीन) रुचिकर चटनी, दही का --(क्रमशः)

मिलाया अन्न, अप्पलालु, बडे आदि अतिरस दासों को (भक्तों को) समर्पित वैभव

''उस भगवान को समर्पित चरण नैवेद्य फैले पूर्ण किए जोड ले तो लगकर आता एक दिन का घी और एक मंदिर में एक वर्ष तक न होता है नहीं।।''

आश्चर्य चकित हुआ। इस वर्णन से हम समझ सकते हैं कि तिरुमला का वैभव कितना शोभित था।

वहाँ अन्नमय्या ने श्रीनिवास की वंदना की भाष्यकारों की स्तुति की। नरसिंह की अर्चना की। जनार्दन की संकीर्तना की। अलिवेलुमंगा का अभिनंदन किया। याग शाला की प्रशंसा की। आनंदनिलय के दर्शन किए उसी क्रम में भगवान के कल्याण मंडप के दर्शन किये। स्वर्ण गरुड, अश्व, शेष वाहन के दर्शन किए।

तिरुमला में नृसिंह स्वामी का, मंदिर के ईशान्य कोने में है। आजकल भी धनुर्मास के संदर्भ में (समय) एक मास भगवान को प्रसाद - नैवेद्य देते हैं। वाहन मंडप के गरुड वाहन के बारे में :--

''इधर गरुड पर चढे तुम छट पट दिशाएँ फटती''।।

शेष वाहन के बारे में :--

''यही है शेष, श्रीवेंकटाद्रि का शेष; शोभा में गरुड के लिए तुल्य है बडा शेष ''॥

अश्व वाहन के बारे में :--

''तुम हो अश्व पर शोभित कौशल हो-- प्रकाशित; हजारों रूप फैलाये तब ।''

विविध (वाहन) सवारियों के बारे में-- स्तुति की और प्रशंसा की। लेपन के जवादि बनाने के प्रदेश देखा गया। इसी प्रदेश (जगह) के पास सोने की शाला में चीनी (शक्कर) खाने वाला पंचरंगों वाला तोता कहता रहता है-- कि भगवान श्री वेंकटेश्वर की सेवा करो। दर्शन करो। उपहार (भेंट) समर्पण कीजिए। पर्वत के भगवान की वंदना की जिए। ये बातें सुनते हैं-- अन्नमय्या । भगवान के रेशमी चीनी-चीनांबर (वस्त्र) और श्रीभांडार देखे। अपनी धोती के आंचल में छिपाये एक सिक्का निकाल स्वर्ण भंडार की वंदना कर भगवान को समर्पण किया। स्वर्ण द्वार पर आ भगवान के दर्शन कर आनंद से रोमांचित शरीर वाला हुआ (फूले न समाया।

इन वर्णनों के आधार अन्नमय्या के समय तिरुमला के भगवान के दर्शन के क्रम और उस समय के मंदिरों का वातावरण, साफ सुथरे आदि मालुम होते हैं । तिरुमला के आस पास के वर्णन से संबंधित कीर्तन उन के साहित्य में अनगिनत देखते हैं।

उदाहरण के लिए एक कीर्तन :--

''जिस ने की सेवा प्राप्त भाग्य है कर में, वेग-वेग आइये रक्षा करते थे हैं विष्णु; गरुड खंभे के यहाँ अमित प्राणाचारों को नर दिए श्रीवल्लभ ने।''

पुष्परिणि के तट पर तीर्थ और फल, क्रम से देते समूहों को देते परमात्मा। मैं पहले हरि के यहाँ चित्त में सुज्ञान अनेक (कई) रीतियों से उत्पन्न करते नारायण, उपहार खण्डों के यहाँ अपना वास्तवरूप बाद में दिखाया, हैं अखिलेशये।। गर्भगृह में प्यार से कर बात चीत, बिनती सुनते श्री वेंकटेश चरणों पर दिखाते इह-पर। मान्य हैं ये अलिवेलु मंगा के विभु।।

इस प्रकार अन्नमय्या तिरुमला के मंदिर के आसपास के सब देख सुवर्ण द्वार पर पहुँचा। श्रीनिवास के दिव्य-मंगल मूर्ति उस ने देखी। वैभवपूर्ण भगवान के श्रेष्ठ मंगल मूर्ति के दर्शन कर --

''देवों के देव हैं ये, दिव्य (श्रेष्ठ) मूर्ति, जहाँ देखें वहाँ आप ही हैं रूप बने। वेंकटाचल पर के विश्वरूप विशेष गिनती के अनंत अवतार बने विशेष। यों स्तुति की है।''

सर्वालंकारों से शोभित भगवान के बारे में फूले न समाते--

''कनक-चरणों पर नूपुर पाजेब घन पीतांबर ऊपर बांध खंजर कमर में कमर बंद सा कमर धनि (कमल धनि) शोभित नाभि कमल ऊपरबांध नख से शिख तक देखी सुंदर शरीर पर हैं, अनुपम मालाएँ;

लगते देखते बनता''
चिरूहास का चेहरा, भगवान का ।।
यों विवरण दिया भगवान के चरण-कमल

''इस चरण ही ने सारी वसुधा नापी, इस चरण ही ने इंदिरा के हस्तों को प्रिय बने ।।''

यों प्रशंसा की। भगवान के सुदर्शन चक्र का--

''वंदना करते हैं तीन मूर्तियों का एक रूप बन शोभित है चक्र।''

यों स्तुति की है।

ताल्लपाक अन्नमाचार्य का पुत्र ताल्लपाक पेदतिरुमलय्या ने सुदर्शन चक्र की महिमा "सुदर्श- खगड" नामसे काव्य लिखा श्री महाविष्णु के पांच शस्त्रों में एक है सुदर्शन चक्र।

"ओंकार युक्त है चक्र;
पार्श्व-मध्य वलया कार है चक्र;
सर्व फल प्रद सहज है चक्र;
पूर्व कोण संपूर्ण है चक्र:"
शंकर, ब्रह्म देवों का है आश्रय चक्र;

इस प्रकार भक्ति और प्रपत्ति से स्तुति की है। ताल्लपाक में चेन्नकेशव स्वामी के मंदिर के सामने सुदर्शन चक्र की स्थापना कर प्रतिष्ठा की गयी। और तिरुपति के गोविंद राजस्वामी मंदरि के आंगन में सुदर्शन स्वामी व चक्रके तालवार की मूल-मूर्ति प्रति ष्ठापित की गयी है। स्वामी के दिव्य मंगल मूर्ति और शस्त्रों की स्तुति कई रीतियों से करते तन्मय से-

"मैं ने देखा अखिलांड के कर्ता को सबसे हैं अधिक;
मैं ने देखा अपना पाप, अवश्य त्याग; दिया उसे ॥"

यों स्वामी की स्तुति की वहाँ के पुजारीने (अर्चक) बालक की भक्ति तत्परता देखी वमुग्ध हुए। तीर्थ प्रसाददे शठगोपसे आशीर्वाद दिये। फौरन-

"श्रीहरि -चरण पाद तीर्थ ही न विनष्ट
हानि वाला है भेषज।
मोह बंधन तोड मुकित देती दवा।

तीरवा अइष्टनहोनेवाली अतिशीतलन पीसने वाली औ न उबाली

की गयी मृदुहै दवा

पंकजाक्ष वेंकट रमण प्रसन्न की है दवा शंका रहित अपने दासों को स्वीकृत

करने वाली दवा।।

इस प्रकार स्वामी के तीर्थ की महिमा स्तुति कर उस दिन एक मंडप में अन्नमरया ने आराम किया।

तीर्थ संदर्शनः-

दूसरे दिन अन्नमरथा तिरुमला के प्रसिद्ध कुमार धारा तीर्य, अमर तीर्थ, आकाश गंगा, अरहर तीर्य, वलिध्नतीर्य, विरजातीर्य, पाप विनाश नम्, वैकुंठतीर्थ, जाबालि तीर्थ, चक्रतीर्थ, तुंबुरतीर्थ, सनक-सनंद, रसायन तीर्थ, विश्वक्सेन तीर्थ, पंचागुधतीर्थ, अग्निकुंडतीर्थ, ब्राह्मीतीर्थ, सप्त ऋषितीर्थ पांडव तीर्थ देव तीर्थ,आदि सब के दर्शन किये।

इन प्रसिध्द तीर्थों का विष्णु वराह और स्कंद पुशणों मेंवर्णन है। तिरुमला में रहे तीर्थों के बारे में वराह पुराण में-

त्रिशः कोटयोऽर्थ कोटिच तीर्थानि भुवनत्रये।।
त्रेषाम प्रकृति भूतानि तीर्थन्य स्मिन हरे-गिरौ

(वराह पुराण ४१ अध्याय१९ श्लोक)

अन्नमय्या ने सर्व तीर्थों के दर्शन कियेऔर स्नान करते हुए-

------- साफ सुथरा जल धवल, पहले आप पहने वस्त्र धो, सुखाकर एक पत्थर माला उस के सूखने में शतक कंठ से गाते ।।

इस प्रकार अन्नमय्या ने शतक का अर्पण किया।

शतक की महिमाः-

अन्नमय्या ने तीर्थ स्नान पूराकिया ।
बारह रेखाओं की नामोंकी अलंकृति की।

स्वामी के दर्शन करने गये तो द्वार बंद था।

''वेंकटपति के बारे में वेंकट शतक का निवेदन कर सुनाया फौरन मंदिर के द्वार खुले।

अर्चकों ने अन्नमय्या की महिमा मान ली।
अन्नमय्या को भगवान के दर्शन निमित्त लेगये।

अन्नमय्या वहाँ के गरुडालवार, विश्ववक्सेन, सीता, राम, लक्ष्मण, हनुमान की वंदना सेवाकी।

विश्वक्सेन :-

इन को सेवै मोदलारनु नामक नाम है। तिरुमला के गर्भ - गुडि मंदिर में उत्सव मूर्तियों द्वारा इस मूर्ति की भी पूजा करते हैं। अध्ययनोत्सव में इस भणवान की आराधना प्रत्योक ढंग से की जाती है।

इनके साहित्य में सेन मोदलारिके बारे में दो कीर्तन देख सकते हैं।

''समर्थ शिष्ट शासकहो
घट बन सकल भुवन की करते हो रक्षा।''।
तुम ही तुम ही हो कहते तुम ही,
श्री विभु प्रभु के प्रतिनिधिहो सेनमोदलारि।

शायद भगवान की सेवा में हनुमान के बारे में अन्नमय्या--
हे पवनात्मज अहो घन हो,
मिटाते, मिटाते हो पाप- यों चलता,
दस मुखहर वेंकट हो ।।
यों स्तुति की ।

अन्नमय्या ने अर्चकों के साथ विविध-

पूजामूर्तियों की अर्चना पूजा की। वेंकटगिरि पति के सामने खडा हो रहा-

मूर्ति का दूसरा रुप हैं ये, कर में शोभित वैखासन है उत्तम, नंबिके वैष्णवभक्त के पास पूजा करते समय- रीति,

वितरण भक्ति वह बालक और वेंकटप्पा को बिनती सुनायी पहली वेंकट शतक है----।

सुनाया फौरन भगवान ने जो मुक्ता हार पहना था, वह नीचे गिर पडा। पुजारियों ने (अर्चकों ने) संभ्रम से बालक की महिमा की स्तुति की।

वेंकटेश्वर शतक चर्चा

ताल्लपाक चिन्नन्न द्विपिद के आधार से देखें तो अन्नमरया ,अलिवेलु मंगा को आशुकविता मौखिकरुप से लगातार कविता कहताथा सुनाताता था।

''सललित एक शतक कहा ॥''

यों अलिवेलुमंगांबिका शतक--

वेंकटपति पर विवरण के साथ
वेंकट शतक सुनाया गया ॥

इसके अनुसार वेंकटेश्वर शतक बताया गया-सा प्रकट होता है।

कथा के संदभनिुसार चिन्नन्न ने जो कहा ये दो शतक भिन्न-भिन्न सा स्पष्ट होता है। परंतु इस में वेंकटेश्वर शतक एक ही प्राप्त है। इस में अलिवेलु मंगांबिका की स्तुति महान-महिमा-पूर्ण,जगन्माता की विशेषता वर्णित है। इस शतक के समर्पण के पद्य भी माता जी को

समर्पित है। इसलिए हम को जो वेंकटेश्वर शतक प्राप्त है, मंगांबिका शतक के रूप में भावना कर सकते हैं।

भगवान के तीर्थ दर्शन के समय अन्नमय्या से बताया गया- वेंकटेश्वर शतक अप्राप्त है।

अन्नमय्या भगवान के प्रसाद नैवद्य में अर्पित भोज्य वस्तु स्वीकार कर वराह स्वामी के मंदिर में सोया । बाद द्वादशी के दिन भगवान के दर्शन कर तिरुमल के बाजारों में पुष्करिणि के चारों ओर भ्रमण कर नारायण का नाम - स्मरण करते एक पंच टीले पर आराम कर चुका ।

पंच संस्कार दीक्षा

उस द्वादशी के भगवान ने अन्नमय्या के प्रति कृपा दिखायी है। वैष्णव धर्म के स्वीकार से भगवान की कृपा प्राप्त दिन है। उन दिनों में घन विष्णु ही वैष्णव यति तिरुमला में रहते थे। वे महान भक्त थे विष्णु के द्वादशी के दिन रात में भगवान ने अपने दर्शन यति को दिए

--- ताल्लपाक के भाई,
मेरे नाम के मेरा है भक्त एक,
ब्रह्मचारी श्यामरंग छोटा, सदा
संकीर्तन करता सदा,
प्रियलाल मोहक है,
वह है हमारा ॥

गले में मृदुकोमल गुच्छों की माला, मुद-मोद से निज-भुज पर रखनेवाला, अति वेग से तुम्हारे यहाँ आयेगा, न करें देरी दुम उसे कराओ तमु।। यों कह भगवान ने अपनी मुद्रिकाएँ यति को दी। धन विष्णु, भगवान के वात्सल्य और भक्ति को देख फूले न समाया। दूसरे

दिन यति संध्यावंदनादि पूरा कर भगवान के दिए शंख, चक्र, मुद्रिकाओं को लेयज्ञशाला गये । वहाँ अन्नमय्या -

"श्री हरि नित्य शेष गिरीश
मोहनाकार मुकुंद नमो श्रीहरि।
देवकी पुत्र देव वामन
गोविंद, गोप-गोपीनाथ
पुरुषोत्तम पुंडरीकाक्ष,"
गरुड ध्वज करुणा निधिहो ॥

थों भणवान के कीर्तन गाते रहे।घन विष्णुस्वामी के आदेशानुसार बालक को पहचान सका। संत्रुप्त हुआ। बालक के पास जाकर भणवान के कहे अनुसार

--- वेद मार्ग के अनुसार
उसे शंख - चक्रान्वित कराया,
आचार के अनुसार पंच संस्कृत

कराया । उस दिन से अन्नमय्या, अन्नमाचार्य बने । वैष्णव पंच सस्कार अति मुख्य है।

तापः पुंड्र; तया नाम मंत्रो यागश्चपंचम;
अमी परम संस्कारा पार मैकांत्य हेतव;॥
ताप; दो भुज मुद्रिकाओं काधारण ,

पुंड्गम = (मुख और भुज, वक्षस्थल) कुल मिलाकर बारह अर्घ्य पुंड्र) नाम दीक्षा समय से) श्रीनिवास दास; = इत्यादि नामों से व्यवहृत होना) मंत्र = ओम नमो नारायणाय याग = (भगवान के आरधना की विधि) ये पंच संस्कार हैं ।

वैष्णव :-

भगवान विष्णु ही प्रमुख प्रधान देव हैं:- यों भावना करने का सिद्धांत है वैष्णव। वैष्णव संप्रदाय की स्थापना के लिए जन्में दिव्य मूर्ति है भगवद्रामानुजुलु। अन्नमय्या ने इन्हें अपना देव समझा और भावना की थी। सब विद्याओं में पारंगत हो, विशिष्टाद्वैत सिद्धांत के प्रवर्तक हो प्रकाशित हुए। ईस्वी. सन् १०-११ वी सदी के समय दक्षिण भारत में जैन, बौद्ध और शैव सिद्धांतों का प्रचार अधिक था; व्याप्ति भी थी। ई. वी. सन् ११बीसदी में तिरुमला वैष्णवः- पुण्य-क्षेत्र के नाम से साबित हुआ। वैखानस आगम के अनुसार मंदिर के आगम विधान बनाये गये थे। रामानुज के विशिष्टाद्वैत ही अन्नमय्या को घन विष्णु बोध किया है। वैष्णव संप्रदाय की प्रशंसा करते-

जो चाहने वालों का ही है वैष्णव यह,
प्यार,प्रेम का मधु है-वैष्णव ॥
सम्मुख श्रीवेंकटेश्वर का है नाम; वदन में, पहुँचाना ही है वैष्णव॥
इष्ट पूर्वक श्रीवेंकटश्वर का सिध्दांत

उस दिन रात स्वन्पमें भगवान की आज्ञ सुनायी गयी

संपत्ति मानते क्षी वैष्णव ॥
सहज वैष्णवाचार के प्रवर्तक,
स्नेह ही है हमारी संघ्या ॥
कोविद हैं वेंकटेश की करते सेवा बडों की कृपा,संबंघी -
सगे है वैष्णव ॥
वैष्णव है सब,नकोई अवैष्णव
सम्मुख ही करते सेवा वही है प्रम ।
सारेविष्णु का प्रभाव,

मिलकर करते, आप की सेवा- करते, वैष्णव॥ इस प्राकार अन्नमय्याने अपने कीर्तनों में स्तुति (प्रशंसा) की है ।

अन्नमय्या के कारण ही ताल्लपाकवाले वैष्णव का स्वीकार कर धन्य हुए। इसी विषय को अन्नमय्या के पोता (पुत्र का पुत्र) श्री तिरुमलय्या ने लिखा-

''बडे ही महान हितोपदेशक, हैं बडे दयालु, वैसे थे ताल्लपाक अन्नमाचार्य

हम हैं कच्चे तामस गुणवाले, परम-सात्विवक बनाये;
यहीं बनाया जितना ही है चित्त
इच्छित हो हमारी जाति में पूर्व में न था- वैष्णव
रुपष्ट रुप से कृपा की अन्नमाचार्य ने।
इस उपर्युक्त कीर्तन में बताया।

अन्नमय्या का जीवन चरित द्विपद(एक वृत्त का नाम) दीक्षा स्वीकार, ताल्लपाक पहुँचना, विवाह कर लेना, मालुम होते हैं। इस संदर्भ में द्विपिद में कुछ विनष्ट हुआ सा मालुम होता है।

वैष्णव संप्रदाय के स्वीकार करने के बाद अन्नमय्या ने कुछ दिन तिरुमला में बिताया- सा भावना करते हैं। अन्नमय्या जब आठ वर्ष के उम्र में था, तो तिरुमला आया था बचपन में। वहाँ ताल्लपाक (ग्राम) में नारायण सूरि - लक्कमांबा (पति-पत्नी) दोनों तिरुमला पहुँच। इन्हों ने अपने पुत्र के लिए अन्वेषण किया। वैष्णव दीक्षा पाशंख- चक्र मुद्राएँ (मुद्रिकाएँ) धारण कर भगवान के बारे में कीर्तन गाते हुए अन्नमय्याको उन्होंने देखा और आनंद विभोर हुए (फूले न समाया)। वेंकट प्रभुभक्त वत्सल है। अपने पुत्र पर बरसायी कृपा देख अमित आनंद पाते हैं। अपने पुत्र कारण-जन्म समझा उन्होंने। पर पुत्र के मोह से अन्नमय्या को ताल्लपाक ग्राम आने आह्वान किया। सदा हरि चरण स्मरणासक्त बन अन्नमय्या माता - पिता के जाना नही चाहता। माता की बात अस्वीकार न कर सकता था। इस से तिरुमलवासी से --

मातापिता हैं क्या आप से भिन्नमुझे। पूर्व के इन को मिलाओ ढकेल प्रभुयाँ बिनती करता है।

''माता की आज्ञा न मानना अच्छा नहीं वत्स।
जाकर आओवच हुए जागृत
इस अच्युत (भगवान कृष्ण की)''
(प्रशांसा कर)

वंदना करते.

माता और आप इष्टपूर्वक प्रथम जन्म स्थान. जा अपने गृह में प्रवेश किया।

ताल्लपाक में अन्नमय्या:-

भगवान के आदेशानुसार अन्नमय्या ताल्लपाक पहूँचा है। तिरुमला छोडने पर. ताल्लपाक पहूँचने पर भी भगवान के किर्तन लिखना. गाना और नारायण के स्मरण को त्याग कर न सका नव विध (नौ प्रकार के) भक्ति-मार्गों में एक है कीर्तन। भक्ति मार्ग का अनुसारण करते रहा था। अन्नमय्या आराधना करता था। भक्ति रसामृत सिंधु (सागर) बताया गया था।

''नाम-लीला गुणादीना मुच्चेर्वाषातो कीर्तनम् '' इस प्रकार भगवान के नाम. लीलाएँ . गुण आदि स्तुति (प्रशंसा)- करते ताल्लपाक में भगवान के तत्व -बोध का श्रीगणेश किया इसने।

''इसका मूल ही है हमें धन-दौलत''
यह है हमारे; बहुत है धन- दौलत॥

माया को यह है सहज, माया को जीतना असंभव; माया के पति की अर्चना मान्यता देते वे ही ॥

भूपर हैं दो काम-निधि चाहने वाली,

जल-जाक्ष औं उनके शरणागति,
जो करते हरि की सेवा - अर्चना प्राप्त होते सब सुख,
गरिमा है उन की, उन का भाग्य ही भाग्य - श्रेष्ठ ॥

इस प्रकार कई विधियों से पर तत्व के बारे में ताल्लपाक निवास पर प्रबोधकरते रहे।

यौवन दशा में विष्णु के गीत गाता था अन्नमय्या; यह देख ग्रामवासियों को ताज्जुब (आश्चर्य) होने लगा। यह बंधु- जन की हेलना (परिहास) से न छूट सका।

अन्नमय्या का विवाहः-

अन्नमय्या के चालचलन को मातापिता ने देखा -समझा । इस का फल स्वरुप विवाह प्रयन्त करने लगे । सफलन हुआ ।

''सदा यह श्रीराम गोविदं हरि कहते- गाते रहता, पर सरल गृहस्थ जीवन की है नहीं इच्छा जो कोई भी हो यह नहीं कहता कि- विवाह नहीं चाहिए।''

आचारों के दासरय्या को देख
देख किस प्रकार वधू को देते ॥
अतं में भगवान की कृपा से -
---------- उन के भाई

राह-मार्ग दिखा अपने भक्त को अन्नमय्या को कन्याओं के देने कहा आह-आह, आ सगा करने

तिरुमल्लम्मा है एक सुंदर नेत्रवाली
विरले ही होती ऐसी कन्या, यक्कलम्मा एक कन्या ''॥

''फौरन विवाह नियमानुसार

धूम-धाम से विवाह कराये ''॥

अन्नमाचार्य गृहस्थाश्रम का जीवन विताते हुए धर्म के अनुसार निर्वाह करता था ।

भगवान की सेवा में लग (डूब) गया।

अन्नमय्या के भक्ति और अनुरक्ति :- को देख वेंकटप्रभु फूले न समाते थे अन्नमय्या भगवान के आदेशानुसार सोलह वर्ष की उम्र से प्रतिदिन एक एक कीर्तन की रचना करते संकीर्तन-यज्ञ का विर्वाह करने लगा। लय, ताल, (साहित्य) के अनुकूल चरण सा कीर्तनों का तेलुगु के साहित्य इतिहास में स्थिरता बना दी है उसने।

अहोबल यात्रा:-

संकीर्तनों का यज्ञ निर्वाह करने वाले अन्नमय्या को भगवान के तत्व बोध कराने वाले वेदों का रहस्य जानने की अभिलाषा हुई । प्रसिद्ध वैष्णव -क्षेत्र अहो बल जाने तैयार हुआ । अहाबल कर्नूलजिले के सिरिवालु मंडल (प्रांत) रुदूवरम ग्राम के पांचमील दूरीपर नल्लमल पहाडों के बीच में है । अहोबल संप्रदाय के स्थापक आदिवन् शठकोप नियति के आश्रय पाने अन्नमायार्च गया ।

अहोबल नृसिंह ही गुरु बन त्रिदंड मंत्र शठकोप यति प्रसाद देते हैं। हयग्रीवानुग्रह (कृपा - दया) पाकर सन्यासी हो वेदांत देशिक के संप्रदाय के अनुचर बन वैष्णव संप्रदाय सिद्धांत का प्रचारक हो कीर्ति पायी थी शठकोप मुनि ने ।

श्री कृष्णदेवराय के शासन काल के शिला लेखों में शठकोप यति के धार्मिक प्रस्तावना दीख पडती है। तिरुपति में वैष्णव धर्म प्रचार श्रीरामानुजाचार्य वेदांत देशिकुलु शठकोपयति और व्यास तीर्थ ने बहुत कृषि की है । अन्नमय्या ने शठकोप यति के पास विशिष्टाद्वैत वेदांत का अध्ययन किया । नृसिंह मंत्र को प्राप्त किया । उस मंत्र के

प्रभाव से अन्नमय्या ने बेंकटेखर के समान विशेष रूप से अहोबल नृसिंह की आराधना की। श्री वेंकटेखर के बारे में ही नहीं बल्कि अहोबल नृसिंह के बारे में जो रचनाँए (रचनाँए) की ; वे सब कीर्तन दूसरे अन्मय्या ने ३२000 (बत्तीस हजार) कीर्तनों की रचनाएँ की है यों ताल्लपाक साहित्य के परिष्कार कर्ता श्री गौरि पेद्दि राम सुब्ब शर्मा जी के विचार थे। अन्नमय्या ने यति के बारे में -

देखो सब को है सुलभ हरि ,
साथी - मित्र हो, प्रभु मुनि है यह ,
करुणानिधि रंग पति को देख ,
श्रेष्ठ हैं वेंकट गिरि पति ,
नित्य अहोबल नृसिंह के
प्रति , तत्पर (सेवा तत्पर) हो शठ कोप मुनि यह ॥
इस प्रकार स्तुति की है।

नृसिंह के संकीर्तन :-

यहाँ अन्नमय्या के पदों में नृसिंह कीर्तनों के बारे में स्थूल रुप से देखेंगे और जांचेंगे।

प्राचीन साहित्य में जगदगुरु शंकराचार्य के लिखे लक्ष्मी नृसिंह स्त्रोत्र प्रसिद्ध है। तेलुगु साहित्य में एर्रना के नृसिंह पुराण में लक्ष्मी नृसिंहावतार के वैभव के बारे में स्पष्ट रुप से विपुलवर्णन है।

शतक साहित्य में नृसिंह के बारे में धर्म पुरि के नरसिंहशतक (शेषप्प कवि की कृति), सिंहाद्रि नरसिंह शतकम्र (गोगुल पाटि कूर्मनाथ कवी),तरिगोंड नृसिंहशतकम आदि कई शतम् प्रकाशित हैं।

लोक साहित्य में, यक्षणानों में और श्री महालक्ष्मि ; चेंचुलक्ष्मी के रुप में प्रसिद्ध हैं (हुए हैं)। अन्नमय्या ने लक्ष्मी नृसिंह के दिव्य स्वरुप के अवतार की विशेषताएँ विविध क्षेत्रों कीमहिमा का वर्णन

करते कई कीर्तन लिखे।

अन्नमय्या ने एगुव (ऊपर) और दिगुव (नीचे (निम्र) के) अहोबल क्षेत्र के मूर्तियों को ही नहीं बलिक सिंहाद्रि, वेयिनूतुल, (ओगनूतुल) वेदाचलम, कनक गिरि और बोम्मिरेड्डी चर्ला, में शोभित नृसिंह स्वामी की स्तुति की। अन्नमय्या रामकृष्ण, नृसिंह किसी भी देव की स्तुति करे सब को अंतिम चरणों में श्रीवेंकटेश्वर से अभेद तत्व की कल्पना कर स्तुति की है।

अहोबल संकीर्तन-
अनादि जग के ओबलम,
अनेकाद्र भुत है ओबलम,
लायक श्री वेंकटधाम विहरम,
हो शुभकर अहोबलम ॥

एगुव अहोबलम् :-

"बडे अहोबलम् का पर्वत है बढता यह, बारंबार बिना छोडे करे अर्चना तो देते वर।"

अहोबलम् के आसपास नव नरसिंहों के बारे में --

"ज्वाला अहोबल मालोल क्रोड का रंज भार्गव,
योगानंद छत्र, वट, पावना, नव मूर्तयः ॥"
इस प्रकार पूर्वजों ने स्तुति की है। अन्नमय्या ने भी --

नव नरसिंह नमो-नमो :-

भव का नाश करते, तीर पर पहुँचाते अहोबल नृसिंह ॥"

कीर्तनों में नृसिंह-क्षेत्र ज्वाल, वीर, योगानंद कानुगुमानि ज्वाला, वीर, योगानंद कानुगुमानि (कारंज), मट्टेमल्ल, भार्गोटि, प्रह्लाद, क्रोडाकार, मालोल नृसिंहों की स्तुति की।

अवनाशितीर में बढते लक्ष्मी नृसिंह के लीलाएँ और विहार (घूमना) भी अन्नमय्या ने कई कीर्तनों में स्तुति की है।

उदाहरण के लिए :- ललनाएँ! देखिए, ये दोनों है चतुर; भवनाश करने वाले पानी, शरीर पर डाल लेती हैं नहाती; सस्ती है यह यह - दौलत हँसता, जवानी के प्यार तिरछे नेत्रों से दिखाता अंत में इंदिरा का स्पर्श किया श्री नरसिंह ने ॥

नृसिंह जयंति :-

जग के वैशाख शुद्ध चतुर्दशि मंद वार अगणित अनुपम मिला स्वाति योग ॥

भीलों का कीर्तन :-

गले लगना है तो आलिंगन करता वह ललना ओं का न कर स्मरण रहसकते हो ?

तोरण बंधपार जाते हो ,नदियाँ पार , पर्वत चढ़ते हो इस प्रकार नृसिंह भगवान के महिमा , लीलाएँ , उत्सव के विशेष कीर्तनों में स्तुति कर मुक्त हुए। अन्नमय्या धन्य हुए।

अन्नमय्या ने अहोबल के आदि वन शठकोप यति से वेदांत रहस्य जान लेते हैं :

''हरि पूजा , हरि - सेवा , हरि - कीर्तन हरि का मनन ,ध्यान सदा अपने को कर धन पर , सब भोग बने आचरण हो; वाल्मीकि रामायण - सब, अनुराण से अच्छी तरह गंधर्व संगीत में अच्छी तरह पढ, सबगीतों का अपने कीर्तनों में-बाद गीत गाया , कीर्तन गीतों में दिखाया माधुर्य।

तुंबर , नारद , गंधर्व के रुप में सब लोगों (लोगों) ने अन्नमय्या की स्तुति की -द्विपद में अन्नमय्या ने रचना की है - जो रामायण - वह

अप्राप्त। परंतु अन्नमय्या कीर्तनों की राशि में रामायण कथा से संबंधित कीर्तन कई हैं।

राजा का आश्रय

अन्नमय्या के ख्याति टंगटूरु का शासक सालुव नरसिंह राय ने सुनी। अन्नमय्या को राजा ने अपने राज दरबार में रहने आह्वान किया (स्वागत किया)।

यहाँ सालुव वंशजों का जिक्र करना उचित है। विजय नगर राजा और तिरुपति के तिरुमल क्षेत्र का संबंध प्रसिद्ध है। सुस्थिर है। विजय नगर के राजा संगम, सालुव, अरवीटि वंशजों ने तिरुमला के प्रभु को कई समर्पण, सेवाएँ की हैं। उन्हों ने अपनी भक्ति और प्रपत्ति दर्शायी।

तिरुपति - सालुव वंश:-

सालुव वंशज विजय नगर के शासकों में दूसरे वंशज थे। सालुव राजा ने विजय नगर पर ई, वी, सन १४८५ से १५०४ तक शासन किया। उस समय प्रसिद्ध वैष्ण क्षेत्र तिरुमला - तिरुपति वैभव में थे। शोभित थे। सालुव वालों में नरसिंह राय प्रसिद्धथे। महामंडलेश्वर, मेदिनी मीसर गंड, कटारि सालुव बिरुदों से भूषित थे।

साल्व नामक बिरुद इन के, वशजों को परंपरा गत हो रह गयी। तिरुमला में ई वी सन १४५६ से १५०० तक सालुव नर सिंह राय और उन के अनुचरों के दिये, दान- शासन दीखते हैं।

अन्नमय्या - सालुव नरसिंह राय

अन्नमय्या के कीर्तन साहित्य में सालुव वंशजों का जिक्र नही (है)। पर चिन्नन्ना के द्विपद के आधार पर सालुव नरसिंह राय का जिक्र प्राप्त है। यह लगभग अन्नमय्या के सम वय (उम्र) वाला था।

इस के शासन का काल ई .वी.सन १४८६ से १४९१ तक इतिहास टंगटूरु का दंड नाथ था। टंगटूरु कडपा जिला राजम पेट तालुका पोत्तपि नाडु मंडल में है। ताल्लपाक ग्राम भी पोत्तपि नाडु मंडल में ही है। इस कारण सालुव नरसिंह राय ने अन्नमय्या के कीर्तन और उन की महानता के बारे में सुना था

वह खबर सुन -सुन ऐसे महान को देखने हृदय में भी लालसा बढी।

परिवार के लोगों ने भी संभ्रम की प्रेरणा 1
पायी , उन ताल्लपाक अन्नमय्या को 2
बढा हाथ जोड , आदर से कर पूजा 3
श्री कृष्ण की मदद पा सारे विश्व पर 4

गीत है - गद्य नहीं।

5. शासन करते अर्जुन जैसे आप की हो मदद मुझे, 6. शासन करूंगा सारी धरणी एक छत्र सा 7. मेरे ऊपर कृपाकर, विनती सुन फौरन 8. हमारे ग्राम के यहाँ आये, औ' हमें बुद्धि (नीति) समझाकर हमारी पूजा ले हमारी, करें रक्षा।। यों नरसिंह राय ने अन्नमय्या से प्रार्थना की। "सहज वैष्णव - भक्ति करनेवाला मित्रता से कोई दोष न होगा।" यों अन्नमय्या ने भी भावना की। सालुव नरसिंहराय की इच्छा (प्रार्थना) स्वीकार की और टंगुटूरू में शोभित (स्थित) केशवमूर्ति मंदिर के पास एक नगरी बना दी है। सालुव नरसिंह राय ने अन्नमय्या को हितकर गुरु और बंधु के रुप में समझा तथा भावना की है।

"पावन ताल्लपाक के अन्नमय्या के आशीर्वाद पा, बढते - वृद्धि होते थे राजा"।।

नरसिंहराय पेनु गोंडा राज्य के प्रभुबने। नृसिंह राय ने अन्नमय्या को टंगुटूरु से पेनु गोंडा बुलालिया।

एक दिन राय ने अन्नमय्या से कहा भगवान वेंकटेश्वर पर सुनाये गये आप के कीर्तन ''लोक में सम्मान हुए, आप के कीर्तन'' सुनने की अभिलाषा (मुराद) व्यक्त की। अन्नमय्या ने राय की इच्छा स्वीकार की।

''शहद पर शुद्ध मधुर ईख-
के शरबत भिन्न किया सो भला,
शक्कर में मीठे शीतल सुगंध
श्रेष्ठ कपूर,जीव रत्नों का-
हो अदभुत मलाई की रुचि(स्वाद)
फैलाते कवि अपने कर जोड उठाये-ऊपर:-
सारे श्रृंगार की शशि एक स्थान.पर ढेर-
बनाने जैसी हो रीति'' ॥

रंग भरे राग वाणी से श्रवणानदं के कई कीर्तन सुनाये अन्नमय्या ने।इनके कीर्तनो(कीर्तनों)की रचना और प्रतिभा देख राय अनुपम संतुष्ट हुए। अन्नमय्या के कई (अनेक) प्रकार आदर- सम्मान किया। उपहार दिए। साल्व नरसिहं राय ने अन्नमय्या को पेनुगोंडा में हीएक नगर बना दिया।

वैष्णव- धर्म प्रटचार के लिए राजा का आश्रय उपयोगी है। इस कारण अन्नमय्या ने भीमान लिया। पेनुगोडामें निर्मित अपने नगरमें रहते अन्नमय्या कीर्तनों द्वारा विशिष्टद्वैत संप्रदाय (धर्म) का -प्रचार करने लगा।

राजा का धिक्कार (राजा की आज्ञ-का उल्लं धन):-

अन्नमय्या पद (कीर्तन) श्रुत हो शास्त्रमय वेंकटशैलवल्ल भवेंकट शैलबल्लभरचि - क्रीडा रह हो कीर्ति पायी। पायी। एक दिन साल्व नरसिंहराय ने अन्नमय्या को दरबार में बुलाया वेंकट वल्लभ

के बारे में मधुर कीर्तन सुनाने प्रार्थना (बिनती)की। सभा में कबि,विव्दान, गायक,(संगीत-२, सामंत (उपराजा), दडंनाथ सब थे। अन्नमय्या ने राजा की अभिलाषा (प्रार्थना-विनय) मान ली है:-

"वाह अधर पर कर-तूरिया लेपन पूरण, क्या हस भामा ने विभु को -लिखा पत्र; तो है न?

ललना चकोराक्षि के आँखों की कोर माणिक हो दीखे,

अब है कथा स्नेह सोचें ललनाएँ श्याम शरीर के प्रण पर गाडे आखों के कोर वह दृष्टि क्या सारे शरीर को उखेडने से लगा-कंत तो नही? प्रेयसी के स्तन (कुच) की शोभा ऊपर - ऊपर उभरे आंचल (आंचल) के बाहर,

बहुत बढे विभव से, देखें ललनाएँ
त्रुस नहुआ, मनो रंजन, प्रिय के- दबाये;
नख, शशि की रेखाएँ,
क्या आयी गरमी की ज्योत्स्ना- सी तो नहिं
प्रेयसी के कपोल पर फैले मुक्ता-वर्षा;
प्रेम प्यार की सहमति के लीला कृत्य , सोचे ललनाँए।
पास तिरुवेंकट पति कामिनि चरण कमल पर
गीले किये रति के श्रम - जल की शोभा तो है क्या
मधुर भकित से पूर्ण कीर्तन भाव बंधुर हो गाकर सुनाया।

ऊपर के कीर्तन का भाव विवरण :-

अभी भगवान के मंदिर से बाहर- आयी- नायिका(देवी) से सहेलियाँ सरस बातों से बोलना, इस का सांराश और बिषय - वस्तु है।

गायिका के नेत्रों के कोने अरुण है, कुचों का प्रकाश कपोलों

पर से झडते श्रमजल की बूंदें, सखियों ने देखा। कारण क्या होगा? सोचकर देवी को सरस रुप और व्यंग्य से चिढाना उस का सारांश है।

नायिका(देवी) के पल्लव जैसे अधरों पर कस्तूरिया का लेपन भरपूर है। उन्होंने सोचकर समझा कि इस भामा ने अपनेप्रभु को लिखा पत्र हैं। ललना के नेत्रों के कोने लाल हो गये थे। विचित्र सौंदर्य पूर्ण प्राप्त है। यह नारी अपने पति के ऊपर गाडे नेत्र कोर(कोने) पूरे-पूरे उखाड ने से लगे रक्त सा नेत्रों के कोनों.के अरुणिमा को समझा। ललना के दोनों कुचों के ऊपर मर्दन करने से नखों के शशि रेखाएँ फैली ग्रीष्म- ऋतु की चाँदनी है अलंकृत श्रम - जल मुक्ताओं के मुक्ता ओं के गहने शोभित हैं यों समझा। वे वेंकट पति ने अपनी प्रेयसी को गले लगारंग लेपन किये रति क्रीडाओं के समय के श्रमजल सा समझा।

दिव्य दंपति(पति - पन्ती) अलिवेलु मंगाऔर श्रीनिवास के रति पर वशता, तत् एकता अन्नमय्या ने मधुर कीर्तन के रुप में सुनाया। सालुव नरसिंह राय ने इस कविता के अनुपम(यह अनुपम कविता) तत्व की प्रशंसा की।

अनुपम हो द्रोणाचार्य के जैसे महिमा देख ; द्रुपद थे द्रौपदी के पिता के गर्व-सा ॥

अन्नमय्या की महिमा सब समझने परभी वेंकट पति पर बकना छोड, मेरे बारे में कीर्तन - पद, गीत - शब्द -

कहे; यों अन्नमय्या से मांगा।

फौरन(तुरंत) अन्नमय्या ने कहा :-

"....... कान फटते मुँह खोल बंद कर हरि हरि कहते -

परम पवित्र भाव से पूर्ण भाव धारण कर हरि मुकुंद की स्तुति करने वाली यह जिह्वा तुम्हारी स्तुति न कर सकेगी। यों कह --

"**भगवान की गरिमा न जानते ये मानव , धन- दौलत रूपी मधुर मुख तिक्त न खायेगा** हरि नारायण उच्चारण करने वालामुँह दूसरों **के नामों का स्पर्श कैसे** करता ? न करता। स्वर पूर्वक पढने वाला **मुख अन्यों के बारे** में कीर्तन न करेगा ॥

नर हरि के कीर्तन से आर्द्र बनी जिह्वा, दूसरों की स्तुति करना **न चाहती** जिह्वा " ॥

यों कई प्रकार सोच -समझ नरसिंह राय के नीच बातों से **खिन्न**(दुखी) हो, राजा के आश्रय से प्राप्त भोग -

"पालकी, उन्नत आसन, तेज दौडनेवाले अश्व बहुत महालक्ष्मी **के भोग** लालसता गाता अपना पति को ही भगवान मान करे सेवा, हमें न चाहिए ऐसी दौलत, क्या अन्य देते"

इस प्रकार राजा कोस्पष्ट रुप से (साफसाफ) बताकर सभा से चले गये।

नरसिंह राय इस धिक्कार (उल्लंघन) न सह सका। सेना से अन्नमायार्य को गिरफ्तार कराया। अन्नमय्या को मूरुराय गंड ने बेडियाँ लगाकर हा थों में, जेल में बंद कराया। तब अन्नमय्या -

"प्यासे - भूखे, पीडित दिन, काले दिन, हरिनाम ही भजे औ न रक्षा कोई; जंजीर लगाये हाथों में; मारने बुलाले जाते समय, बाधा हो, जिन्हों ने कह दिये, कर्ज दिये थे वे रुके थे वेंकटेश का नामही ने छुडाया, न अन्य, वे हीरक्षा करते।

हत बुद्धि हो तो औं न मार्ग कोई "॥

इस प्रकार आर्त चरण परायण है- भगवान वेंकट विभु की **प्रार्थना करते ही हथकडियाँ खुल गयीं**। नौकरों ने यह विषय राजा **को बताया।** राजा ने मैत्री त्याग पुनः बैडियाँ लगायीं। अन्नमय्या ने

अमित दुख से कहा-

''तुम्हारे दासों के भंग देखते हो तुम्हें सूचित करना है?

इस प्रकार भगवानक की प्रार्थना की. बेडियाँछूट गयीं। राजा यह देख भय भीत हो. अन्नमय्या के चरण कमलों की वंदना की। और कहा --

''अन्नमाचार्य मैं कसूर वार(अपराधी) हूँ कृपा करो मुझ पर . मैं कृपण हूँ आप के शरण में हूँ, कृपा करो''॥

अगर तुम क्रोधी होतो नीलवर्ण वाले भगवान क्रोधी होते ;

तुम प्यार करें तो, माने तो नीरजोदर (भगवान विष्णु) मानते,

मैं ने सब अर्थ देखा अन्नमाचार्य तुम में ही देखा सचमुच ही ''-

यों रानी से -

अन्नमय्या की प्रार्थना कर राजमर्यादा ओं से सम्मान किया। अन्नमय्या ने राजा को क्षमा की।

''ध्यायन कृते यजस यज्ञस्त्रे तयाम् द्वापरे अर्च यस

यदा प्रोति तदा प्रोति कलौ संकीर्त्य केशवम''। कृत युग में घयान से, त्रेतायुग में थज्ञ-यागों से द्वापर में अर्चनाओं से कलियुग में हरि कीर्तन से लोग मुक्तिपाते हैं।

हरि भक्तों की सेवाकरनी चाहिए। भगवान के भक्तका अपमान भगवान के अपमान से बढकर है. बडा अपराध है, दोष है। सबको बोध कराया। राजाश्रय छोड तिरुमला आश्रृंगारमंजरि का समर्पण किया।

अन्नमय्या ने लिखी लघुकृतियों में प्राप्त हुई रचनाओं में यह एक है। ताल्लपाकवाले द्विपद प्रक्रिया में ही नहीं बल्कि द्विपद भेद होने वाले(भिन्न होने वाले) मंजरी द्विपद में भी रचनाएँ की हैं। हम को उपलब्ध

होने वाली ताल्लपाक मंजरियाँ-

श्रुंगार मंजरि
सुभद्रा कल्याण(ताल्लपाक तिम्मक्का)
चक्रवाल मंजरि(पेद तिरुमलय्या)

श्रुंगार मंजरि ५१७ पंक्तियों का, मंजरि द्विपद काव्य है। भगवान पर प्रेम बढाकर एक कन्या विरहावस्था का अनुभव कर बाद भगवान के समीप पहुँचने का विषय इस में है। मनोहर रचना संवि धान से पूर्ण रचना(कृति) है।

अन्नमाचार्य ने तिरुमला में भगवान को मधुर भकित के श्रुंगार कीर्तन कई सुनाये। अन्नमय्या की भावना, चमत्कार मरुगुरु तन्मय हुए।

''जग में तुम्हारे श्रुंगार के कीर्तन
देख अच्छे यौवन का हुआ मैं
वेंकटेश्वर ने अन्नमाचार्य को देख
प्रशंसा कर, किया सम्मान ''॥

तिरुमला में श्री वेंकटेश्वर भगवान के प्रति वर्ष होने वाले ब्रहमोत्सवों में भी भाग लेते थे।

उन्होंने देश का भ्रमण कर कई क्षेत्र मूर्तियों पर कई कीर्तनों की रचनाएँ की।

उत्सवादि विशेषताओं के बारे में प्रत्येक रुप से जिक्रकिया जाता है।

अन्नमय्या की महिमाएँ :-

''- - - - - वह श्री शैल नाथ
पावन रव्याति प्रभाव से

जग में सकल वाक्रशुद्धि से''।

जीवन बिताता था उन के मुख(मुँह) से जो बात निकलती अक्षरशः अमल होता था।

एक दिन नैवेद्य के रुप में आम अर्पण किये।

आप के खाने से फल खट्टे थे -

''अमृत है बहन तुम्हारी, कमल मुखी, अमृत से त्रृप्त बने आर्द्र भगवान को''। बहुत खट्टे आम समर्पण करने के कारण दुखी हुआ। फौरन ये खट्टे आम के वृक्ष का स्पर्श कर इस के फल मीठे होने (करने) भगवान वेंकटपति की प्रार्थना की। वे आम जो खट्टे थे, मीठे फल होगये। इस संदर्भ को याद दिलाने वाले कीर्तन भी हैं।

''खट्टे आम के फल करके स्पर्श ही से रुचि(स्वाद) बनायी तो वह भगवान का पुत्र यही हैं''।

इसी प्रकार एक गरीब ब्राह्मण ने अपनी (अपनी) पुत्री के विवाह के लिए अन्नमय्या से धन मांगा। अन्नमय्याके वंशमें रही वाणी से एक राजा ने ब्राह्मण - कन्या के विवाह के लिए धन का संग्रह(संचय) कराया इस तरह अन्नमय्याकी महिमाएँ जान कर लोगों ने कहा :-

''शोभित है, मेरे गुरुश्रीपादसा,
शिरोधार्य बनाये, अपनी विपदाएँ दूरकी।''

अन्नमय्या और पुरंदरदासः-

अन्नमय्या के द्विपद आधार से यह प्रतीत होता है कि अन्नमाचार्य और पुंरदर दास में मित्रता थी। अन्नमय्या और पुरंदर दासके मैत्री के बारे में जिक्र करने के पहले तेलुगु और कन्नड प्रदेशों के राजनीति और साहित्य में आपस के संबंध के बारे में विवरण देने के बाद हरि दासों की मैत्री की प्रस्तावना करना उचित है।

अन्नमय्या के कीर्तनों में वैष्णव संप्रदाय भी दीखती है। तेलुगु और कन्नड साहित्य - संप्रदायों का अनुबंध पूर्व से ही है। इस के कारण ये हैं :-

तेलुगु और कन्नड प्रदेश नैसर्गिक रुप से(भूगोल के अनुसार) एक हीभू भाग से लगे हुए हैं।

राजनीति से- इन दोनों प्रदेशों को पल्लव, चालुक्य, विजय नगर के अधिपति ने शासन किया है। विजय नगर के राजा, श्री वेंकटेश्वश्वर भगवान के भक्त थे। इस कारण कन्नड वालों को तिरुपति से संबंध बढाने का मौका मिला। साल्व नरसिंह राय के शासन काल में अन्नमय्या के पदों का विजय नगर प्रांत में प्रचार बढा। कीर्तन व्याप्त हुए। विजयनगर के राजाओं के शासन काल में कर्नाटकांध्रप्रदेश मिलजुल कर थे।

तेलुगु और कन्नडभाषाएँ, एक ही भाषा के परिवार के हैं।

ईसवी सन् ।। सदी में कन्नड प्रदेश में नर हरि तीर्थ से अंकुरित(प्रारंभकिया) हरिदासों की मिलाप ईसवी सन्न १५ वी सदी में श्रीपादराय ने परिपुष्ट किया। बाद वैष्ण व भवित- तत्व और कर्नाटक हरिदास संप्रदाय (संप्रदाय) का देश के चारों ओर पुरंदर दासने फैलाया। इन का समय २४८४ ई.वी, सन्न १२८४ से १५६४ तक था। थों और ई.नी.सन्न.१४७६ से १५६४है। हस प्रकार भिन्न विचार (मत) हैं। पुरंदरदास ने अन्नमरया के बुढापे में देखा होगा। अन्नमरया के महान महिमा से पूर्ण शक्ति कविता रावित और भक्ति तत्परता के बारे में पुरंदरदर्शन ने सुनी भी थी। हस कारण अन्नमय्या के दर्शन करने पुरंदर्शन कर साक्षात भागवान श्री वेंकटेश्वर का अवतार कह, स्तुतिकी पुरंदरदांस ने। अन्नमय्या से गले मिल तुम ने संध्यावंदना केलिए भगनान से ही पानी (जल) मंगाया; भाग्यवान हो - यों और विठल

के अवतार हो - स्तुति की।

अन्नमय्या ने ३२,००० (पद) कीर्तनों की तो पुरंदरदास ४,७५,००० कीर्तनों की रचना की थी :- यों कन्नड विद्वानों का मत (विचार) अन्नमय्या और पुरंदरदास के कीतेनों में भाव की समानता के कई कीर्तन दीखते है। कुछ उदाहरण :-

अन्नमय्या :-

न खा सकते न मोल सकते फल है-देव लोक का;

मन में गर सो चे तो मुँह में पानी भर देने वाला यह फल''॥

पुरंदरदास:- आये फल, मोलिये इन को उन का छोटा बालक है कृष्ण सुंदर मीठा फल'।

अन्नमय्या:-

''क्या उन्नत महोन्नत सुख मुफत में मिलेगा''।

पुरंदरदास:-

''क्या मुफत में मुकित प्राप्त होगी''।

अन्नमय्या:-

''हे मनं! न हो चंचलमत बन(भक्ति श्रद्धा) न छोड मन''।

पुरंदरदास:-

''हे मना नहो चपल ,मैं हूँ करता हो बिनती, मन में कपट न हाने दे''॥

अन्नमय्या:- ''वह है देखो विजय नगरके मुहल्लों में विठल ने फैला दिए वर''॥

पुरंदरदास:-''मैं हूँ आता आप के शरण में,विठला देते शरण (रक्षा)

करुणा सागर हो, क्यों न करते रक्षा विठल''।।

अन्नमय्या की रचनाएँ:

''योग मार्ग में एक कुछ बुद्धिमान (महान) शोभित श्रृंगार रस की रीति में कुछ;विराग की रचना से ख्याति प्राप्त कुछ;कमल लोचन पर कुछ कीर्तन''।।

सरस दल सम्मुखँ हैं हुए,
परम तंत्र हैं बत्तीस हजार,

विमल (शुद्ध- पवित्र) द्विपद प्रबंध काव्य के रूप में, नव्य (नवीन) रामायण की दिव्य भाषा,(मेरे) इस वेंकटाद्रि की सारी महिमा, सुरुचिपूर्ण बनायी श्रृंगर मंजरि,शतक द्वादश(बारह) सब भावों में अनुपम बेजोड बने कई, प्रबंध काव्य''। लक्षमी के प्रभु को संतुष्ट बनाया। इन में से हम को १४,000 कीर्तन प्राप्त होते हैं।

श्रृंगार मंजरि और वेंकटेश्वर शतक हैं। शेष रचनाएँ द्विपद रामायण, संस्कृत वेंकटाद्रि महात्म्य, ग्यारह शतक और प्रबंध काव्य काल गर्भ में विलीन हो गये।

अन्नमय्या के पदकविता की रीतियाँ :-

अन्नमय्या के पद कविता की रीतियों के बारे में चर्चा करने के पहले १५ वी ई .बी. सदी के बारे में आंध्र साहित्य के इतिहास और राजनीति के बारे में विश्लेषण करना है।

आंध्र साहित्य के इतिहास में ई .वी . सन् १५ वी सदी में अष्टादश वर्णन, रस, अलंकार आदि की विशेषताएँ, व्यंग्य (व्यंजन), वैभव तथा कविता चातुरी से पूर्ण प्रबंध काव्यों के प्रकट होने का समय था। राजनीति से देखें तो मुसलमानों के चढाई करने से छिन्ना भिन्न संप्रदाय की व्यवस्था थी। ऐसी हालत में वैष्णव धर्म प्रसिद्धि के प्रचार करनेवाले साहित्य का स्थिर करने अन्नमय्या ने पद प्रक्रिया

लिखने का प्रयत्न किया- सा प्रकट होता है।

अन्नमय्या ने महान - भकतों की श्रेणी के होने पर भी केवल स्त्रोत्र - पूर्ण- कीर्तन गीत न गाये। संगीतज्ञ होने के नाते नाद प्रधान कविता ही न लिखी बलिक महान कवि होने पर भी काव्यों की रचना की है। आंध्र साहित्य में पद- क्रिया को एक सुस्थिर स्थान दिलाया। पद-कविता पितामह की प्रशंसा प्राप्त की है।

अन्नमय्या के कीर्तनों में अधिक श्रृंगार रस प्रधान है। और कुछ आध्यात्मिक हैं। अन्नमय्या के आध्यात्मिक पद कीर्तनों के बारे में चिन तिरुमलय्या ने कहा :-

''पावन है हरिभक्ति के
वेभाव हैं सर्वमंत्र परम रहस्य के
उत्पन्न भाव हैं ये गायकों के
श्रेष्ठ उपवन हैं ताल्लपाक के अन्नमय्या की रचनाएँ ''॥

''देहात्मेक विवेको त्साह, लोक के वेद, धर्म औं अधर्म के विचार हैं भावुकता से पूर्ण ;

उस हरि के संकीर्तन हैं आध्यात्म के ''।

यों संकीर्तन लक्षण - ग्रंथ में विवरण दिया। भगवान के प्रति भक्ति - तत्व कई रीतियों से(अनेक प्रकार) कीर्तनों में समाया, अन्नमाचार्य ने। निष्काम कर्मठ हो श्रीवेंकटेश्वर (भगवान बालाजी) के प्रति अचंचल भक्तित और विश्वास से प्रबोधात्मक संदेश पूर्ण कई कीर्तनों की रचना की है।भागवत में प्रस्तावित नव विधभक्ति की भिन्नताएँ कीर्तनों में उदाहरण के रूप से विवरण दिया।वेदों के प्रमाण,परतत्व, देहदेहिका अनुबंध (संबंध) शरणागति माया तत्व और परंज्योति परतत्व के अनेक ढंगों से वर्णन किया।

उदाहरण के लिए कुछ कीर्तन :-

''सर्व भोगों के अनुभव करने के बाद पर तत्व चिंतन के बारे में प्रयत्न करना मूर्खता है। ''

''समुद्रे शातं कल्लोले स्वातु मिच्चछति मूढधी,
तथैव शांते संसारे ज्ञान मिच्छति दुर्मतिः''॥

हस प्रकार के सूत्रार्थ प्रणालिका के भाव-

''सब कुछ भोग पा कर पाप गंगा में स्नान करना सोचते हैं। अंत न होती कब मन की बासनाएँ मुवित कै से होती?''

यों सरल रूप से समझाया। भक्त सागर में डूब जीव भगवान के तत्वस्वरूप समझना असंभव व असाध्य है। भव सागर के तत्व स्वरूप सदा सत्य व्रती और संपूर्ण रूप से मोहत्याग (मोहरहित)व्यक्ति ही समझ सकते हैं। मोहत्यागी ही जान सकते हैं, तुम हों इंदिरा रमण'', यों स्तुति की।

जीवकी रक्षा करना कर्तव्य है भगवान का-''जो मालदार हैं वे अपने मालको न होने देता खराब।''

श्रेष्ठ सुंदर इस मालकी रक्षा, मेरे हरि रक्षा करें'' यों स्पष्ट किया।

कर्मबंधन से छूटपाना भगवान के द्धारा भी न हो सकता। ''क्या सामान्य है पूर्व कर्म का फल, कुशल पूर्वक सब को लिपटे रहता जग के भगवान को प्राणियों के भव बंधन, सब कोः लगे रहते, दुष्कर्म से ही बार बार अपनी स्त्री, पुरष- बहुत ही बंधन बनायी गयी भगवान को भी''- यों चमत्कार से कहा। अन्नमय्या ने निरचलमन से भगवान की-आरा धना कई प्रकार की ;और मक्त हुए। हस लिए संपूर्ण शांति देनेवाला सर्वेश्वर के प्रति भवित, मुझे नचिंता सोच, मुझे क्यों आचार चाहिए? अधिक या हीन ऊंच नीच) सब में तुम हो नित्य सुख देती - तुम्हारी दासता और सेवा। आदि कई बोध करानेवाले कीर्तन द्राविड

वेद हैं। वेदांत के रूप में कीर्ति प्राप्त आलवारों की पाशुराओं से तुलना कर सकते हैं। वैष्णव भकित साहिप्य के रूप में आलवारों ने जो साहिप्य की रचनाएँ की हैं। उन के द्राविड वेदों को अन्नमय्या ने कई कीर्तनों में परिपुष्ट किया ।

श्रंगारकीर्तन :-

अन्नमय्या ने श्री वेंकटेश्वर को परतत्व के रूप में भावनाकी । श्रुंगार भक्ति भावना के कई हजार कीर्तन लिखे । लोक के अस्थिर सुख, त्याग, परमात्मापर मन केंद्रित किया । सोपानक्रम से परमात्म पर तन्मयभाव प्राप्त करना ही मधुर भक्ति का लक्ष्य है । वैष्णव में गोपिका ओंकी भक्ति सुप्रसिद्धि है। ''पुमाण विष्णु रीति ख्यातः स्त्रीप्राय मितरम जगत''।। इस वैष्णव संप्रदाय को अन्नमय्या ने अनुसरण कियां। इन के पद कीर्तन राशि में जीवात्मा, परमात्मा के संयोग के लए आतुर होना, तपना कई रीतियों से उल्लेखित है । इक का कारण है-

आम लोगों को तत्व दृष्टि से भगवान को देखमुक्त न होना वश में है और न हो सकता । अपने अनुभवों के उचित श्रंगीर लीलाएँ मुधर पूर्वक गा सकते हैं ।

इस कारण अन्नमय्या ने श्रुंगार रस-दृष्टि से ही वेकेटेश्वर नामांकित कीर्तन लिखे । और कृतार्थ होने की भावना से गुड-जिह्वा का न्याय से उन श्रुंगार कीर्तनों की राशि बढायी होंगी। यों श्री गौरि पेद्दिरामसुब्ब शर्मा के पदों में यहाँ अनुसंधान करना होगा । अन्नमय्याने श्रुंराप कीर्तन संयोगा का वर्णन करते समय, संयोगांत से अंत करना (समाप्त) करना सहज ही है। विप्रलंभ (वियोग) स्थति के कीर्तन भी किसीन किसी तरह अंतिम पंक्ति में भी भगवान के दीर्घ काल तक विरह को न सहन करसकने चित्तस्वभाव है अन्नमय्या का ।

अन्नमय्या के श्रुंगार कीर्तनों में अष्टविध नाथिका भेद, संभोग

-विप्रलं भश्रृंगार वर्णन विशेष रूप से (अधिक) स्थान पा चुके हैं।

यही नहीं सौभाग्य है यही नहीं बलिक (बलिक) तप और यही नहीं, वैभव है क्या अलग और, ललनाका जन्मफल परमयोगी एक सा अन्यमोहा पेक्षाएँ सब त्यागी गयी। सति की इच्छाएँ महा शांत हो यह देख सदा विज्ञान की गंध -सी रही''। नामक यह कीर्तन अलौकिक श्रृंगार के परम अर्थ(भाव) को समझाने वाला - मधुर कीर्तन है। नायिका भगवान से- तादापप्म्य होनो की कोशिश है यह। जीवात्मा, परमाप्मा विषय हो जो आनंद प्राप्त करती है।(अनुपम) दिव्य है। नायिका के व्दारा प्रकटित की गयी है। अलिवेल्मंग और श्रीनिवास के- दिव्य लीला वैभव मधुर अारै मनोहर रूप से (भावों से)कई हजारों श्रृंगार- कीर्तन लिखे- धन्यजीवी थे अन्नमय्या।- अन्नमय्या के कीर्तनों में देशी कविताएँ ''अनेक विविध देशों के अनेक कवियों की बुध्दि वर्णन रचनाओं से, मान्यतानक राण''।।से शोभित देशी पद राजाओं को स्तुत्य किसी भी साहित्य में भी पद्य से पद हो''।।(कीर्तन)ही पहले जन्मा है, यह विवाद का अंश नही (निर्विवाद) है।

ग्रामीण लोग (सामान्य मानव) कष्ट सुख दुखों में भावा बेश के शिकार होने पर उन के हृदयों की गहराई से बिना प्रयन्त के उप्पन्न गीत ही लोक गीत हैं।लोक गीतों में सरल शैली में ही रचनाएँ होती हैं- योंअन्नमय्या का प्रधान उद्देश्य है। आम लोगों में वैष्णव-धर्म का प्रचार करने में इस के लिए भाषाऔर भाव आलंबन हैं। भागवत तत्व आमलोगों को समझाने की कोशिश में अन्नमय्या के कीर्तनों (पदों) में कई प्रकार के लोक साहित्य कीरीति यों ने स्थान ग्रहण किया।

अन्नमय्या के पूर्व देशी कविता:-

नन्नय केभारत के काव्य में देशीय छंद रीतियाँ तरुवोज, मध्यक्कर दीखते हैं। नन्ने चोड के कुमार संभव में शंकर अंक मालिकाएँ, उविद के अधिक लोरियाँ, अलतुलु, उत्रवल के गीत (धान आदिकूटते

समय गाने वाले गीत) गौडु गीतों का जिक्र किया गया।

पालकुरिकि सोमना(ई.वी.सन् तेरहवी सदी) पंडिताराध्य चरित में भ्रमर, प्रभात, पर्वत, आनंद शंकर, निवालि (वंदना) वालेशु, गोब्बि (देहाती नृत्यगीत) चांदिनी के गीत आदि, बसव पुराण में कोलाट (भजनगीत), चांगुबला, लोरियाँजिक्र किये गये।

कृष्णमाचार्य ने देशी रीति के अनिबंध पदरचना की। उन की जो रचनाएँ हैं गद्यके कीर्तन, तुलसी की महिमा, नृसिहं पद,(गद्य)राम नाम संकीर्तन, बाद के पद कविता के कवियों को मार्ग दर्शक हुए।

ई. वी. सन् १४ वीसदी में नाचन सोमन वसंत विलास जाजर गीतों का जिक्र किया। पोतना के भागवत में बालुनंकिंचि गानेवाले गीत, गोविदं के प्रति गाने वाले गीत, श्रीनाथ कवि नें भीमेश्वर पुराण में यक्षगान शैली का जिक्र किया। अन्नमय्या के समय के पूर्व दीखने वाले लिखित रूप का लोक साहित्य ,थही था।

देशी कविता प्रीक्रया के जागरण गीत, सुव्विगीत, गोब्बि (ग्रामीण) ,जाजर, सोदि भ्रमर, तोत, तंदान, एलो, कोलाट (भजन) चंदमामा, शोभनम, आरति, निवानल, धवल उय्याल (झूला) लोरियाँ, जोल (शिशुओं को सुलानेवाले)मंगल पानमुख, कूगूगुलु तात्विक (तत्वसंबंधी), बागुबलालु यही नही बलिक, बालक्रीडा कीर्तन, दिव्य नाम सं कीर्तन, वृत्तात्मक कीर्तन, जाति वाचक गीत, उत्सव कीर्तन, आदि लोक साहित्य की रीतियाँ- अन्नमय्या के पद (कीर्तन)साहित्य में दीखते हैं। उदाहरण के लिए कुछ गीतः-

जागरण केः-("चुपचाप) मौन मौन लीलाएँ वेष छोड जागोः नेत्रों के आध मूंदे तुम्हारी निद्रा हो अंत, जागो।"

भजन (भजन):- "व्यर्थ-प्रेम मत फैलाओ (दिखाओ)विष्णुमूर्ति! मुझपर दुख दुर हो बोलो मुझ से विष्णु मूर्ति ॥"

दशावतारः-''दस दस ही होते, परमाप्मा हैं ये, इन के रवोज, रुचिकर भोज देदे''। मत्स्य सूकर हो कीचड़ में दौडा दल -दल लगी देहपर, इस भगवान ने मिट्टी ढोयी, सुंदर हो भयंकर राक्षसी के रक्त पिया,गुलाब जल से शरीर को- रचना कराये''।

चागु बलाः-''सुंदर माता को चागु बला, अपने-चीनी मुख को चागु बला''।

शोभनम्रः-''अहो ! युवती ललनाएँ शोभनम्र के गीत गावें, दोनों को है मघ ुर आनंद उत्सव शोभित हैं,देखिए''।।

आरतिः-''नारियाँ दें दें आरति अंगज गुरु है दे आरति''।

बालक्रीडा कीर्तनः-''शकटतोड छोटे बालकों सेखेलःनटखट आया आंखमिचैानी-सा''।दिव्यनाम संकीर्तनः-भगवान का नाम एक ही दिव्य है(श्रेष्ठ) भगवान के नाम दोहे के अंत में (चरण के अंत में) रख, भक्त भीड़ हो गाने लायक हैं।दिव्य नाम संकीर्तन।। पाल्कुरिकि सोमना (शैवकवि) ने पंडिता राध्य चरित के प्रथम कीर्तन कार के रूप में कहे जानेवाले कृष्णमाचार्य ने रामनृसिहं लिखा । भगवान के श्रेष्ठ नामों का कई कीर्तनों में अन्नमय्या नेलिखा है। चतुर्विंशति, केशवादि नाम, राम, हनुमान, चेन्नकेशव, विठल आीद श्रेष्ठ नाम कीर्तन (दिव्य नाम कीर्तन) इन के साहिप्य में स्थान बनालिये हैं ।

उदाहरण के लिए दो कीर्तनः-''नमो, नमो! लक्ष्मि नृसिहं ! नमो,नमो, सुग्रीव नृसिहं! तुम्हारे पवन प्रभु है बहुत ही स्पर्धा वाले, विरव्यात हुए मतंग पर्वत के पवन पुत्र हैं ''।

वृत्यात्मक कीर्तनः-अन्नमय्या ने अनपढ और पंडितों के जनरंजन कीर्तन कारया । भक्ति तत्व के प्रचार करने केलिए देश का भ्रमण किया । ग्रामीण लोगों को आकर्षित करने कुछ वृप्यप्मक कीर्तन (गीत) लिखे। उदाहरण के लिए ।

खेती बारी :- फसलों के भाग्वान हैं ये, कई- (वृत्यात्मक =वृन्निसंबंधी (पेशेवार) खेती करते, करते मेहनत, रक्षा करते ॥ अच्छे उत्तमवाले ये''।

व्यापार :-''गाँव,गाँव में हर प्रांत में साथ रहने वाले (मिल-जुल रहने वाले)

साये में रह वस्त्र बेचते बेपार वाले''।

ग्वालिन:-(व्रजवनिता)''सोने के रंग बाली! आप कहीं न जन्म लेती अन्य जातिमें''।

वैद्य:-''खरीद लीजिये,खरीद लीजिये- प्रिया दवा:

सब रोगों को मिटाता है यह दवा''॥

कुलवाचक:-लंबा ऊँचा शेषगिरि वाल्मीकी का है नायक, सब की रक्षा करता, न किसी का- प्यार करता, बडा नायक है (नेता) वाल्मीकों का''।

इस प्रकार अन्नमय्या के कीर्तनों (पदों) में विविध लोक साहिप्य की रीतियाँ स्थान बना लेने का मुख्य कारण:-उन्हों ने देश का भ्रमण किया और जन -जीवन के साहिप्य का खूब समझ कर जीर्ण कर लिया ।

भाषा की विशेषताएँ:- अन्नमय्या ने शिष्ट व्यावहारिक:(आमबोल चालकी भाषा) और (आम लोगों के व्यवहार में रही भाषा) तथा ग्रांथिक भाषा तीनों की-पधानता दी गयी है। पंडितों को मुग्घ करने, बनाने (प्रशंसा पाने) संस्कृत भाषा में कुछ कीर्तन लिखे थे। और वेंकटाचल की महिमा भी लिखी है। शिष्टों की प्रीति होनो के लिए (करने) शिष्ट व्यावहारिक भाषा का प्रयोग कीर्तनों में किया है।

अन्नमय्या के पदों में (कीर्तनों में) अन पढ लोपगों की भाषा

को घहला स्थान दिया गया।

उदाहरण के लिए कुछ प्रयोगः- रूकिमणी, वायिदालु (स्थगित करना) कापुरालु (परिवार) आदि व्यावहारिक शब्दों का प्रयोग है।

मुहावरें :- माँ को नप्यार है तो दासी का प्रेम होना (तल्लिकिलेनिमुद्दुदरि का -तेलुगु में) (रोम्मुन कुंपटि -तेलुगु) हृदय शूल।

(चेपट्टुकुंदामु = तेलुगु) लेलेंगे।

(वलपु बडंल वच्चु =तेलुगु) प्रेम गडियों भर लाना (अमितप्रेम)।

देश का भ्रमणः-

आंध्रप्रदेश के कीर्तन कारों में कई तीर्थ स्थानों के दर्शन करने वालों में अधिक स्तुति और प्रशंसा पानेवाले अन्नमय्या ही थे। मुख्यतः रायलसीमा के कर्नूल, अनंतपुरम, चित्तूरु जिलों को गुंटूरु, नेल्लूरु जिलों को कर्नाटक के कामल। पुरम, मातंगादि विजयनगार और तमिलनाडु के कंचि श्रीरंगम् और चिदंबरश्रेत्रों के दर्शन किये।

रायलसीमा के कर्नूल जिलेमें शोभित अहोबिल नृसिंह की स्तुति, चागलमर्रि और वेलिगोड्डु में शोभित चेन्नकेशव, अनंतपुरम जिलेके कदिरि नृसिंह, गुत्ति के रघुराम, कडपा जिले के ओगुनूतल नृसिंह ओंटिमिट्टा के कोदंडराम कोन चेन्नकेशव देवुनि कडपा के वेंकटेश्वर, नल्लबल्लिके चेन्नकेश्व नंदलूरु के सौम्यनाथ, पालगिरिके चेन्नकेशव, पुलिवेंदला केरंगनायक पेदचेप्पल्लि पेद्दमडियम, प्रोद्दुटूरु, पोटलदुर्ति मादनूरु, माडुपूरु वत्तलूरु संबटूरु, वेलिगेंडु और चागालमर्रु में बिलसित चेन्नकेशव।

चित्तूरु जिले के तिरुपति गोविंद राजु हनुमंत, श्रीराम, तिरुमल वेंकटेश्वर, वायलपाडु के श्रीरामचद्रं वेलूरूजिले के उदयगिरि श्रीकृष्ण, गंडरवम के गोपाल कृष्ण, गुंटूरु जिले के कुरुनूतल चेन्नु की कर्नाटक

प्रांत के मतंगादि हनुमंतु . नहीं विजनगार के विठल, श्रीराम, श्रीकृष्ण, नारसिंह कीस्तुति की । यहीं नहीं बल्कि वलिक, तिरुमला के आस-पास अंजनगिरि , शेषाद्रि, गरुडाद्रि वेदाद्रि और भवनाशि, तुंगभद्रा पुष्करिणितीर्थ, भूपतितालाब, आदितीर्थों काजिक्र अपने कीर्तनों में किया । ताल्लपाक के चारों ओर पटचक्रांकित में रहे पहाडी दुर्गों के हर एक कोने चेन्नकेशव के मंदिर हैं। स्थानिकों के द्वारा (पहचान) समझ लिये । श्रीगौरिपेद्दि राम सुब्बशर्मा जी ने श्रृंगार कीर्तन के बारहवें संपुटम के भूमिका में चार्चा की है ।

इस प्रकार कई देश, प्रदेशों का भ्रमण कर विविध क्षेत्रों के देवों और तिरुमला के भगवान वेंकटेश्वर में अभेद (अभिन्न), दिखाते हुए कई कीर्तनों की रचना की थी ।

संकीर्तनों में उत्सव विशेष :- उत्सूते सुख मिति उत्सवः आनंद अधिक देनेवाला उत्सतों का अर्थ है । उत+स्वः उत्सवः परिवार के दुख सागर का पार करानेवाला, मंगलदायक और उत्कृष्ट होनेवाला है- उत्सव का भावार्थ है ।

उत्सव दो प्रकार के हैं-(१) मूल मूर्ति का होता है ।(२)उत्सव मूर्ति का होने वाला । इन में सामान्य उत्सव और पर्वोप्सव- (त्योहारों पर होने वाले) दो प्रकार के होते हैं ।

वेंकटगिरि पर भगवान के नित्योत्सव, वारोत्सव (साप्ताहिक-उत्सव), मासोत्सव घूमधाम से मनाये जाते हैं । नित्योत्सव में - सूप्रभात सेवा, तोमालसेवा, कोलु (दरबार) अष्टोतर सहस्र नामार्चनाएँ, निवेदन, सर्व दर्शन, एकांत सेवा, समर्पण होते हैं । सप्ताहोत्सवों में बुघवार के दिन सहस्र कलशाभिषेकम, गुरुवार के दिन तिरुपावड(तिरुपावड) और शुरुवार के दिन अभिषेकोत्सवों में ब्रह्मोत्सव, वसंतोत्सव, उट्ल उत्सव (छूंका उत्सव)-डोलोत्सव, रथोत्सव, कल्याणोत्सव, लटटों का बेडोत्सव, पुष्पयागम्, दीपावलि,

उगादि, श्री रामपट्टाभिषेक, अनंत पद्मनाभ चतुर्दशि,विजयदशिमि,-(दशहरा) कोडैतिरुनालः वन भोजनोत्सव और कौमुदी महोत्सव कीर्तनों में जिक्र किये गये (वर्णित) हैं। अन्नमय्या के पद केवल भक्तिमार्ग का ही प्रबोधनहीं करते बल्कि इन के शोघ और समालेचना से उस समय के तिरुमला में मंदिर की विशेषताएँ समझ सकते हैं। अन्नमय्या ने साल्व नरसिहंराय के दरबार छोड तिरन्मला जाकर वहाँ के बह्मोत्स में भाग लिया ; सेवा की और अर्चना की।

''हर एक वर्ष (प्रतिवर्ष) में जरन्र वृषभाद्रि पति के होने वाले उन ब्रह्मोत्सवों की करसेवा औ अर्चना''। इन उपर्युक्त पंक्तियों से मालुम होता है। अंस्तु ब्रह्मोप्सवों के बारे में जाँचते हैं।

बह्मोप्सव :- तिरन्मला में बह्मोत्सव अति पूर्वकाल से होनेवाले विशेष उत्सव हैं। इन उत्सवों को ; पहले भगवान ब्रह्म ने निर्वाह कराये।इस विचार से ब्रहनोत्सव का नाम स्यिर हुआ सा मालुम होता है। यही नहीं बलिक नव ब्रह्म नवान्हिक दीक्षा से तिरुमला में उत्सवों का निर्वाहकराना, वेंकटेश्वर को परब्रह्म स्वरूप की भावना करना है। यहाँ के होने वाले उत्सवों में सब से ब्रह्मोत्सव धूम-धाम से (अति वैभव से) होते हैं। इस से ब्रह्मोत्सवों के विचार कई रूपों में स्थिर बने। ब्रह्मोत्सवों के बारे में उपनिषतों के काल से (समय से) परमात्मकोपनिषत में वराह,पद्म, भविष्यत पुराणों में आगम प्रकीर्ण काधिकारम में वर्णित हैं।

ब्रह्मोत्सवों की संरव्या :-ब्रह्मोत्सव आज कल प्रति वर्ष एक बार और अधिक मास केआनेवाले वर्षों में दो बार निर्वाह करते हैं। परंतु ऐतिहासिक रूप से और अन्नमय्या के कीर्तनों के आधारों से जांचने पर ब्रह्मोत्सवों की संरव्या में और उत्सवों की संरव्या में और उत्सव विशेषताओं में भिन्नता दीख पडती है। तिरुमला में ई.वी. सन १६ से ई.वी सन् १६०६ तक प्राप्त शासनों में ब्रह्मनोंत्सव होते थे -यों

मालुम होते हैं। अन्नमय्या के पदों के (कीर्तनों के)आघारों से जांचने से बरस(वर्ष) में एक बार ही ब्रह्मोत्सव मनाये जाते थे; यों जान सकते हैं। ''कई प्रांतों के भक्त विश्वास कर श्री वेंकट के पति के दर्शन करने आते प्रतिवर्ष-बने महान''।। इस प्रकार के वाक्य इस के लिए उदाहरण हैं।

ब्रह्मोत्वों के दिनों की संख्या:- तिरुमला के शासनों के आधार से जांचने पर ब्रह्मोत्सव दस दिन तक निर्वाह करते थे यों प्रकट होता है। ब्रह्मोत्सवों के समय होनेवाले वाहन सेवाओं के बारे में अन्नमय्या ने वर्णन किया-''तिरुमला के बाजार में शोभित देवों के देव, गरिमाओं से बढ़कर श्रृंगार पूर्ण तिरु (श्रेष्ठ) मालालंकृत हो पालकियों में जाते जुलूस, प्रथम दिन, दूसरे दिन धन-दौलत से शेष-पर; तीसरे दिन प्यार-प्रेम से प्रिया हो मुक्ताओं के मंडप के नीचे; चौथे दिन फूलों के मंदिर से अलंकृत पांचवे दिन गरुड पर जाते शोभित सातवे दिन गज पर जाते शोभित सातवे दिन सूर्यप्रभा में अलंकृत, आठवे दिन अश्वारोढ हो शोभित; नौवें दिन कनक के डोली में बने सुंदर; दसवें दिन विवाह के पीठों पर बैठ, हो प्रिय श्री वेंकटश्वर- अलिमेलमंगादेवी के साथ ललनाओं के बीच वाहनों पर शोभित होते ''।। पुराणों में और कीर्तनों में दीखने वालों ब्रह्मोत्सवों के वर्णनों में भिन्नता दीखती है। अन्नमय्या के कीर्तनों में वर्णित तिरुदंडेलु मुत्यालु मंडप (मोतियों का मंडप) पुष्पकोविल (फूलों का मंदिर), कमक पुटंदलम (सुवर्णपालकी) आजकल के मनुष्यां दोलिका,मौक्तिक मंडप, कल्पवृक्ष, पालकी वाहन नामांतर के रूप में दीखते हैं। पुराणों में वर्णित हंस,सिंह,सर्वभूपाल, हनुमद्वाहन वगैरहों का जिक्र अन्नमय्या के कीर्तनों में न दीखता।

वाहन संकीर्तन - ''यही है शेषसर्प, श्री वेंकटाद्रि का शेष; प्रिय हो शोभित गरुड के समान शेष ।।''

''गरुड वाहन'':-''इधर तुम गरुड पर हो आरुढ पटापट से दिशाएँ

हुई, फट गयीं''॥

''गज वाहन'':-''बन सुंदर आरुढ हुए भगवान गज पर''॥इन वाहनों के कीर्तन ब्रह्मोंत्सओं के समय(समय)आलाप करते थे.यों भावना करते हैं।

कल्याणोत्स:-भगवान के होने वाले प्रधान उत्सवों में कल्याणोत्सव एक है। और इन के बारे में ई.वी.सन १५४८ और ई.वी.सन १५५४ वर्षों में बनाये शासन दीखते हैं। इन दोनों शासनों में कल्याणोत्सव के होने वाले दिनों के बारे में और विधानों के बारे में विशेष विवरण हैं। अन्नमाचार्य के दौहित्ररेवणूरि वेंकटाचार्य ने श्रीपाद रेणु महिमा में-लिखाः-श्री शोभित मगंम्मा को श्री ताल्लपाक अन्नमय्या के पदों में धरती के हमारे ताल्लपाक चिन्नन्न के पद (कीर्तन) गाते.नव शयन शयन शेष,प्रभु के चरणरज, हमें दे तो वही चलता भूपर''।

शकुंतला परिणय में :-(परिणय=विवाह)''वह महान भगवान हमारे मातामह वंश शिखा-रत्न अन्नमाचार्य जामाता भवदीय कीर्तन सुनाये आनंद कर्णों से अन्य कीर्तन न सुजूंगा - यों कसम खायीं गयी यों वर्णित (वर्णन) है।

उपर्युक्त ग्रंथों के आधार से ताल्लपाक वंशज ही तिरुमला में कल्याणोत्सवों के प्रमुख व्यक्ति थे -- यों कह सकते हैं।

कीर्तनों में कल्याणोत्सव :-

कल्याणोत्सव के समय आचरण करनेवाले आगम विधानों का अन्नमय्या ने भक्ति (तत्व से) स्तुति की है:-

ब्रह्मोत्सव संकीर्तनों में :-

''आखिर दसवें दिन विवाह पीठ पर '' इस से मालुम होता है कि ब्रह्मोत्सवों के बाद ही कल्याणोत्सव निर्वाह किया जाता था। दिव्य दंपति (पति-पत्नी) अलिवेलमंगा व श्रीनिवास का विवाहोत्सव

(कल्याणोत्सव) का, कई कीर्तनों में वर्णन किया गया। विवाह समय में ढीखे जानेवाले मौर बनाना और बांधना विवाह पीढा (पीठ), परदा, मंगल से हरा, कंकण धारण, मुहूर्त, अक्षत देना सिर पर चावल डाल लेना (वधूवर), आंचल -धोती बंधन, सेस, विडेल और उपहार, आरति, शोभनादि आचार सब, कीर्तनों में वर्णन किया गया है।

अन्नमय्या ने तिरुमला में होनेवाले उत्सव ही नहीं बल्कि तिरुपति, देवुनि कडपा, ओगुनूतल अहोबलम, गंडवरम् चिदंबरम और विजयनगर के क्षेत्र -स्थानों में होनेवाले उत्सवों का भी वर्णन किया है। अन्नमय्या ने देश का भ्रमण करते, प्रतिद्ध मंदिरों के उत्सवों की विशेषताएँ अगले पीढी के वालों के लिए अर्पण कीं, -महान मानव थे वे।

ताल्लपाकवालों के कैंकर्थः- (समर्पण) तिरुमला में भगवान वेंकट विभु के निर्वाह होने वाले सुप्रभातम् और एकांत सेवा में ताल्लपाक वालों को भगवान कातांबूल (पान-सुपारी) और प्रसाद (पूजापदार्थ) देते हैं । तिरुमला में होनेवाले कल्याणोत्सवों में, ताल्लपाकवाले अम्माजी के पक्ष में कन्यादाताओं के रूप में व्यवहार करते हैं। यह आचार आजकल भी अमल में है। तिरुबायारों में होनेवाले अत्सवों में भी ताल्लपाक के वालों को प्रत्येक आदर है। यही नहीं बलिक उगादि और दीपावली के त्योहारों के दिनों में स्वर्ण द्वार के पास मनाया जानेवाला भगवान के कैंकर्थों में (समर्पणों में) ताल्लपाक वालों के प्रत्येक आरति है।

प्रत्येक रूप में उगीदि से ४० (चालीस) दिनों तक नित्योत्सवों में ताल्लपाक वालों को विशेष आदर -सत्कार हैं। इन चालीस दिनों में कीर्तन भांडागार के यहाँ आरति सेवा है।

अन्नमया ने केवल भगवान के उत्सवों के वैभव के बारे में कीर्तनों में स्तुति करना ही नहीं बलिक अपने वंश के सब लोगों को

भी भागेदार बना (बना) मुक्त करायाऔर वे धन्यात्मा थे।

संकीर्तनों का भांडागारः-

कवियों की रचनाओं के ताम्र-पत्रों में लिखाने का आचार आंध्र-प्रदेश के ताल्लपाक कवियों के पूर्व और उत्तरकाल में नहीं था। इस पद्धति का प्रारंभ ताल्लपाकवालों ने ही किया। यो ही आदय हैं। (प्रारंभकर चुके हैं)। भारतदेश में काव्यों का ताम्रपत्रों पर लिखाने का संप्रदाय (अच्छा आचार) प्रचीन काल में है- यों मालुम होता है। कनिष्क ने कुछ बौद्ध -धर्मों के ग्रंथों को ताम्र-पत्रों पर लिखाया था यों हुयान सांग ने (हूयान त्साग) जिक्र किया। सायणाचार्य के वेदभाष्य का भी ताम्र पत्रों पर लिखाये जाने की एक ऐतिहासिक घटना (वृत्तांत) हैयों डि. सि. सरकार ने जिक्रकिया। लघुकाव्यों का - शिलाओं पर लिखाने का आचार है। यहाँ का चीपुरम के कच्छ पेश्वर आलय (मंदिर) में एक शिलास्तं भपर मयूर केट सूर्यशतक लिखी गयीयों . पि. अर. यह. पंचमखी जीने कहा।

ताल्लपाक कवियों के साहित्य को ताम्र पत्रों परलिखाकर तिरुमल मंदिर के प्रांगणम में सुरक्षित रखने के कमरे का नाम तल्लपाक अलमारी के नाम से व्यवहार करते हैं। ताल्लपाक कमरे के ताल्लपाक वालों के साहित्य के बारे में हमारे प्राचीन कवियों ने जिक्र किया। पहले पहल जिसने जिक्र किया। वे विदेशी ए.डि. कांबले ई.वी. सन् १८१६ लिखेपद (विषयः-)

''Having heard that a number of poems ingrave on some Thavand sheets of copper have been preserved by the pious care of a family of Brahmins in the temple on the sacred hill at Tirupati, I deputed a native for the purpose of examining them, but with the exception of a treatise on grammar of which a copy was taken, the whole collection was found to contain nothing but voluminous hymns in praise of the daity. Grammar of Telugu language by A.D. Cambell, first Edition 1st 1816, Madras)"

तिरुमलामें भगवान के मंदिर में विमान प्रदक्षिणा प्राकार मंडप के पास (लगे) उत्तर दिशा में भाष्यकारों के जो मंदिर इस के पार्श्व में संकीर्तन भांडागार में ताम्रपत्र सुरक्षित रखे गये।

इस में प्राप्त पात्रों का विवरण है-

ताल्लपाक अन्नमय्या के	२२८९
ताल्लपाक पेदतिरुमलय्या के	२०५
ताल्लपाक चिनतिरुलमय्या के	३७
उनके अलावा छोटे -बडे पत्र	१७०

कुलप्रात्प ताम्र पत्र-	२७०१

कीर्तनों को ताम्रपत्रों पर लिखाना साधारण विषय नहीं है। संकीर्तन भंडार के (भांडागार के) व्यवस्था के बारे में पहले ई वी. सन १५३० के (उस समय के) ताल्लपाक शासन में है।

ई. वी. सन् १५२० के शासन में अच्युतराय ने ब्रह्मोत्सवों के समय में संकीर्तन के भांडगार के सामने नैवेद्य के समर्पण की व्यवस्था के बारे में जिक्र किया था। ई.वी. सन् १५४५ और १५५८ के शासिनों में भी संकीर्तन भांडागार के बारे में जिक्र किया गाया। विषय स्पष्ट रूप में (साफ सुथरा) यथार्थ मालुम होता है। इस संकीर्तन भांडागार के दीप और नैवेद्य समर्पण करने वेधन और प्रसाद देकर कीर्तन गाने वालों को नियुक्त करना, कीर्तन सुनने वाले को गुलाब जल देना और चंदन, तांबूल (पान-सुपारी) देने के बारे में लिखा गया है। नित्य तिरुमंजन के समय ब्रह्मोत्सवों तथा उत्सवों में इन कीर्तनों को गाने क आचार कराया। ग्रीष्मोत्सवों में "संकीर्तन अरुलुप्पाडु" व्यवस्था की। (अरुलुप्पाडुयाने दयाकी भावना से गाने वाले कीर्तनों का उत्सव है।) तिरुपति में गोविंद राज स्वामी मंदिर में भी कीर्तन गाने की

व्यवस्था की गयी।

इस भांडागार के द्वार के दोनों ओर अन्नमय्या और पेदतिरुमलय्या के शिलामूर्तियाँ है।

संकीर्तन के प्रक्रिया को, दूसरे रचनाओं को (शाश्वत) स्थिरता देने ताल्लपाक अर (अर=कमरा) बनाकर कैंकर्यादि के निर्वाह के विषय में ताल्लपाक के वालों का श्रम-

"न भूतो न भविष्यति"

(कीर्तिशेष) स्वर्गीय साधु सुब्रह्मण्य शास्त्री ने संकीर्तन भांडागार के कीर्तन ताम्रपत्रों को पहले पहल (प्रप्रथम) ई.वी. सन् १९२२ में निकाल-लिपिरेखा रूप में लिखित प्रतियाँ बनायी। ताल्लपाक कवियों के जीवन की विशेषताएँ, रचानाएँ, भगवान के कैंकर्य, शासनों के आधार साबित किया।

ताल्लपाक के संकीर्तनों का परिष्कार मुद्रण :-

ताल्पाक के साहित्य पंडित वि.वि. बिजयराघवाचार्य, वेटूरि प्रभाकर, श्रीनिवासायार्च पि.वी., राल्लपल्लि अनंत कृष्णशर्मा, पि.टि. जगन्नाथाचार्य और गौरि पेद्दि सुब्बराम शर्मा ने परिष्कार किया।

ताल्लपाक साहित्य का तिरुमला तिरुपति देवस्थानम् के वाले ई.वी. सन् -१९३५ से प्रकट करते (रहे) हैं। ई.वी. सन् १९३५ के वर्ष में ताल्लपाक के लघु कृतियाँ प्रथम भाग १९३६-'६७ वर्ष में अन्नमाचार्य और पेदतिरुमलाचार्य के कीर्तन २,३ भागों में छापे गये हैं। १९४७ वर्ष से अन्नमाचार्य के कीर्तन परिष्कार संविधान के रूप में प्रकट किये जा रहे हैं। ई.वी. १९४७ वर्ष तक ताल्लपाक वालों के कीर्तन ३१ भागों में छापे गये। इक्कीस और तेईस के भाग पेदतिरुमलय्या के हैं। सोलहवा भाग चिनतिरुमलय्या का है। शेष ३१ वे भागों तक अन्नमाचार्य के थे। चौथे भाग से ३१ (इकतीस) भागों तक अन्नमय्या

के थे। इन में पाँचवे भाग से ग्यारहवे भागों तक आध्यात्म के कीर्तन चौथा ४ भाग से १२ भाग तक. वे भाग से ३१ तक श्रुंगार (श्रुंगार) कीर्तन हैं। याने आज तक अन्नमय्या के कुल आध्यात्म और श्रुंगार कीर्तन २५ भागों में प्रकट किये गये। और भागों का अपना है।

"सारस नेत्र पर कीर्तन
सरसतासे सम्मुखहो
परमतंत्र हैं बत्तीसहजाग"।।

रचना की गयी। द्विपद के आधार से मालुम होता है। पर हम को ताम्र-पत्रों से प्राप्त होने वाले लग भग १४००० हैं। शेष कीर्तन काल गर्भ में लीन हो गाये। (डूब गये)

ताल्लपाक के वंशजः-

"लक्ष्मी पति को कर स्तुति आनंद पा वर
उस भगवान से. अपने जैसे पुत्र.
सरस आचार्य उन्नत यशोधन.
(यशप्राप्त) तिरुमलाचार्य के धी"
विशारद को.
देख वे अपने कृत्य से विद्याएँ
कनकवस्त्रधारी के प्रति भक्ति
संपत्ति (दौलत) दे बढे
हरि की कथा-सुधा आलाप कर
गरिमा से.
सारे भूपर शोभित हुए।।"

ताल्लपाक वंश के यश के भूल आधार पुरुष थे। अन्नमय्या अन्नमय्या की धर्मपत्नी, पुत्र और उनके पोते भी कवि और कीर्तनकार के रूप में आंध्र साहित्य में स्थिर स्थान पा चुके थे।

तााल्लपाक तिम्मक्का :-

यह अन्नमय्या के प्रथम पत्नी थी 'सुभद्रा कल्याणमु' नामक गीति काव्य की रचना की थी इसने प्रथम लेलुगु कंवइत्री थी। मंजरी द्विपद काव्य है। सुभद्रकल्याणमु- स्त्रियों के उपयुक्त मधुर रचना है, यह काव्य १९४७ वर्ष में देवस्थानम् वालों से प्रकाशित किया गया है।

ताल्लपाक नरसिंगन्ना :-

यह अन्नमय्या का बडा पुत्र था। इन की रचनाएँ अप्राप्त हैं। कवि कर्ण रसायन के कर्ता ये ही हैं यों शोधकों का विचार है।

ताल्लपाक पेदतिरुमलय्या :-

ये अन्नमाचार्य - के द्वितीय पुत्र थे । श्रीमद वेदमार्ग प्रतिष्ठापनाचार्य वेदांताचार्य कवितार्किक केसरि आदि बिरुद पा चुके थे। इन का सीहित्य कुल २०९ ताम्रपत्रों में प्राप्त होता हे। रचनाओं का विवरण:-

१. आध्यात्म कीर्तन - ७६. ताम्र पत्र.
२. श्रृंगार कीर्तन - ८९ ताम्र पत्र.
३. सीता (सीसवृत्तों में - १० ताम्र पत्र.
४. चक्रवाल मंजरि - २- ताम्र पत्र.
५. सुदर्शन रगड - १- ताम्र पत्र.
६. श्रृंगार दंडकम - ३- ताम्र पत्र.
७. रेफ "र" कानिर्णय -४- ताम्र पत्र.
९. वंकटेश्वरोदा हरणम् -७ - ताम्र पत्र.
९. वृत्त पद्य शतकम् - ७- ताम्र पत्र.
१०. वैराग्य वचन मालिकागीत -१- ताम्र पत्र.
११. भगवदगीता तेलुगु गद्य श्रीवेंकटेश्वर विश्वविद्यालय से १९७८ में प्रकाशित है।

१२. हरिवंशमु - अप्राप्त। चिन्नन्ना ने अष्टमहिषी कल्याण में जिक्र किया।

१३. संकीर्तन - लक्षण व्याख्या -अप्राप्त।

१४. श्रीवेंकटेश्वर प्रभात स्तवः- १९४५ में प्रकाशित वेंकटेश्वर वचनों से प्रकाशित है।

तााल्लपाक चिनतिरुमलाचार्यः-

वह पेदतिरुमलय्या के बडा पुत्र था इनका साहित्य ३७ तालपत्रों में प्राप्त हैं। अष्ट भाषा सम्राट के नाम से बिरुद प्राप्त कर चुके थे।

१) श्रृंगार संकीर्तन -२० ताम्र पत्रों में.

२) आध्यात्म संकीर्तन १० ताम्र पत्रों में.

३) अष्टभाषा दंडकम् ३ ताम्र पत्रों में.

४) संकीर्तन लक्षण - ४- ताम्र पत्रों में थे १९३५ वर्ष में देवस्थानम् वालों से प्रकाशित हैं।

ताल्लपाक अन्नमय्या (अन्नय्या) :-

पेदतिरुमलाचार्य के दूसरे पुत्र थे। ये सब विद्याओं में जांचने से पहले के अन्नमार्च के समान थे -यों ऐसे आचार्य थे- कीर्ति पायी इन्हों ने वे धर्म के प्रचार केलिए गुंटूरु गये थे। यों शासनों में लिखा, इन शासनों द्वारा मालुम होता है।

ताल्लपाक पेदतिरुवेंगलनाथ :-

संगीत और संत कविता के अनुपमकलाकार थे। यह भगवान के सामने कीर्तन गाता था-यों कहते हैं। रेवनूरि वेंकटाचार्य ने शकुंतला परिणय (विवाह) में विशेष रूप से तिरुवेंगलनाथ कीर्तन गाते थे- यों जिक्र किया।

ताल्लपाक चिन तिरुवेंगलनाथ- (चिन्नन्न ये पेदतिरुमलय्या के चतुर्थ पुत्र थे इनकी रचनाएँ:-)

१. अन्नमाचार्य चरित। १९४९ वर्ष में प्रथम रुप से देवस्थानमवालों से प्रकाशित है। १९७८ में द्वितीय मुद्रण हुआ।

२. परमयोगि-विलास द्विपदकाव्य- १९३८ में प्रकाशित है।

३. अष्टमहिषी कल्याणम् :- द्विपदकाव्य १९३८ में प्रकाशित है।

ताल्लपाक वालों के साहित्य मंदिर केलिए धर्म ही आधार शिला (बुनियाद)है। संस्कृत और तेलुगु भित्तियों की शिलाएँ हैं। कीर्तन आदि साहित्य प्रक्रियाएँ हैं। इन में जो आराधना के देव श्रीवेंकटेश्वर स्वामी (भगवान) हैं। धर्मार्थकाम मोक्ष चार प्रकार हैं। मधुरकविताएँ द्वार हैं (कवाट हैं)। सार्वजनीन और सर्व कालीन के उत्तम भाव संपदा मंदिर का भंडार है। वे कवी ही अर्चक (पुजारी) हैं। भक्ति ही भगवान का प्रसाद है। गीत गाना ही भगवान के अंग-रंग-भोग हैं। रसिक जन ही यात्री हैं। यही उन की कविता का स्वरुप है। इस पकार डा. वेटूरि आनंद मूर्ति के पद (शब्द) चिर स्मरण के हैं।

अवतार समाप्तिः-

अन्नमायार्च ने ई. वी. सन् १५०३ में दिव्य भोग करने आइये।
रहे वैकुंठ में आलवारों के साथ
लोक के नित्य मुक्तिवालों में रह
श्रीकांता के साथ श्रीवेंकटेश से मिल,

इधर भोग करने; गृहपर आइये। संकीर्तनों से सनकादि सब गाने लगे; शोभित वेकटाद्रि के भूमि पर से बंधन हो वेंकटगिरि लक्ष्मी के विभु, तुम आओ हमारे गृह पर, भोग कर जावें। अन्नमय्या को हरिका अवतार मान, पिताजी भगवान के वर प्रसाद के रूप में अन्नमय्या के

पुत्र और पोतों ने स्तुति की है।

हरि का अवतार है ये अन्नमय्या;
जांच कर देखें तो ये हैं हमारे गुरु अन्नमय्या
वैकुंठ पुर में रह स्तुति गीत-गाते हैं ये।।

केन्द्र हो ताल्लपाक के अन्नमय्या आकाश में विष्णु चरण पर हैं नित्य; जहाँ देखो इत्र-तत्र-सर्वत्र हैं अन्नमय्या ताल्लपाक के; क्षीराब्दि शायी (क्षीर सागर शयन) की, सेवा ऐसे ही करते रहे हैं, निखर उठे हो ताल्लपाक अन्नमय्या; धीर हो, सूर्य मंडल के तेज के पास हैं; उन रीतियों से हैं ताल्लपाक अन्नमय्या इधर है जग की लीला, इंदिरा के पति के साथ रहते; तब से ताल्लपाक अन्नमय्या; भावना करने पर हैं, श्रीवेङ्कटेश चरण पर हैं।

हाव-भाव से हो ताल्लपाक अन्नमय्या।। चिन तिरुमलय्या ने अपने दादा जीके बारे में लिखा है--

''अब्बा भगवान के वर प्रसाद हैं अन्नमय्या;
प्रसाद के रूप हैं अन्नमय्या हमारे,
सब का बन शासक आदि नारायण को
अपनी आत्मा में स्थिर बना कर अन्नमय्या;

संतुष्ट हो शोभित हुए सनक सनंदनादि; के समान थे ताल्लपाक के अन्नमय्या बिरुद के कडियां बना कर कीर्तन, हरि के प्रति सुनाये अन्नमय्या ने; व्याप्त विपुल भावार्थ वेदों का सब, समझ, समझाया, अन्नमय्या ने। सुंदर मधुर रामानुजाचार्य का धर्म, प्राप्त कर स्थिर कहे अन्नमय्या''।। दावत के रूप में भगवान अन्नमय्या ''वेंकटनाथ'' को औ' हमें दिये कीर्तन अमित ।। सब में ताल्लपाक अन्नमय्या ने । शरण में आये उन के संबंध में, रुचि दिखा हमें पाले-पोसे मान कर सब वेदों को कीर्तन (कीर्तन)बना प्रकट से तुम्हारी

स्तुति कर पावन हुए :- निर्मल ताल्लपाक के अन्नमय्या थे। भगवान हो कलियुग के श्री वेंकटनिलय; नारद, सनक-सनंद नादि के जैसे हो यश पा, तुम्हारी कर स्तुति हुए महान इसी तरह के ये ताल्लपाक अन्नमाचार्य उन से मिल पालन किया श्री वेंकट-निलय के सामवेद, सामगान, सप्त स्वरों से, पत्नी शेष सर्प के साथ तुम्हारी पत्नी ने की स्तुति वैसे थे ताल्लपाक के अन्नमय्या ॥ कई बार प्रशंसा की श्री वेंकट निलय ने। अन्नमाचार्य के संबंध से महान बने हैं- यों विवरण के कीर्तन हैं। संगीत और साहिप्य के मधुर मेल-मिलाप से वैष्णव धर्म के प्रचार के लिए और तेलुगु साहित्य की जो सेवा की यी-अनुपम और अवर्णनीय है। "गिरा अनयन,नयन बिनु वाणि"।

---- तिरुवेंगलनाथ रचित सद भक्त विभवान्नमाचार्य का है ; सद चरित जग में है प्रशंसनीय, वे शंख-चक्र के अंक के यश के साथ आचंद्र तारार्क हो शोभित ॥ चिन्नन्ना के ये पद (गीत) ही चिरस्मरणीय हैं। श्री ताल्लपाक अन्नमाचार्य का जीवन समाप्त हुआ।